वर्ष 25
अंक 2

हँसती दुनिया

(बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका)

फरवरी
1998

कहानियां

सफेद फूल	कुम्भनाथ शर्मा	3
गुरु का उपदेश	विनय कुमार मालवीय	9
झूठी शान आफत में जान	नरेन्द्र सिंधवी	26
पंडित हीरालाल	प्रेम किशोर पटेल	34
दयालु बालक	परशुराम संबल	37
ज्ञानी लकड़हारा	राजुमार जैन 'राजन'	56
चालाक कछुआ	राम अरोड़ा	59
पढ़ाई का महत्व	सुभाष कुमार	61

कविताएं

बसन्त में खिला...	डॉ. भैरू लाल	7	दो बालगीत	डॉ. राम निवास	25
फूल व बच्चे	मुन्ना बाज	8	चार क्षणिकाएं	लक्ष्मीकान्त	49
फूल	हरि सिंह हरीश'	8	गलत संग	किशोर निरंकारी	62
			दूध और चाँद	राम अरोड़ा	63

लेख

बहादुर बालिका शैली खन्ना	डॉ. विद्या श्रीवास्तव	20
वीर बालिका : मेकल सुतासिंह	डॉ. विद्या श्रीवास्तव	21
एक अनोखा टेलीफोन	प्रो. पी. आर. शुक्ल	22
एक अद्भूत पक्षी : कीवी	अभिनन्दन	23

चित्रकथा :

पूसी	30
मास्टर जी	52

स्तम्भ

सबसे पहले	2
कभी न भूलो	17
दादा के उत्तर	18
डॉ. अंकल के उत्तर	41
समाचार	42
पढ़ो और हँसो	44
रंग भरो प्रतियोगिता	46
आपके पत्र मिले	64

प्रकाशक एवं मुद्रक श्री निर्मल जोशी ने सन्त निरंकारी मण्डल, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली-9 के लिये, हरदेव प्रिण्टर्ज निरंकारी कालोनी, दिल्ली-9 में मुद्रित करवाया।
कार्यालय फोन : 7430181

सम्पादक (अवैतनिक)	सहायक सम्पादक	कला निर्देशक
विनय जोशी	विमलेश आहूजा	दीपक शर्मा

वार्षिक चन्दा : 30/- रु. जीवन-पर्यन्त : 300/- रु. एक प्रति : 4/- रु.
इंग्लैण्ड £7 £100
अमेरिका $12, कनाडा $15 अमेरिका $150, कनाडा $200

सबसे पहले

उमंग, लक्की व पिंकी पक्की सहेलियाँ थीं । एक ही कक्षा में पढ़ती थीं । लक्की सबसे बड़ी थी । पढ़ने-लिखने में तीनों ठीक थीं । शरारतों में भी पीछे नहीं थीं । फिर एक दिन अध्यापिका ने लक्की को कक्षा का मानीटर बना दिया। लक्की मानीटर बनते ही शरारतों से पीछे हट गई । उमंग भी शान्त हो गई । परन्तु पिंकी पहले से भी अधिक शरारती हो गई । उमंग अब सबसे और अधिक प्यार से बोलती, खूब पढ़ती व हर कार्य में लक्की का साथ भी निभाती।

पिंकी अब कभी-कभी कक्षा में देर से आने लगी; हर घण्टे के बाद अपना डैस्क भी बदल लेती । कोई जरा-सा कुछ कहता तो तुनककर उसे नीचा दिखाने का प्रयास भी करती । उसके इस व्यवहार से लक्की को कई बार नीचा भी देखना पड़ता । पर पिंकी पर इसका कोई असर न हुआ ।

एक बार तीनों सहेलियाँ मिलकर बैठीं तब लक्की ने पिंकी को कहा— तुम अपने स्वभाव को बदलती क्यों नहीं ?

पिंकी झट से बोली—अब तुम मानीटर हो तो क्या अब भी मज़े न लें । पिछली बार जब हर्षा मानीटर थी तो उसकी सहेलियाँ भी तो मज़े उड़ाती थीं । फिर बोली—इस उमंग को पता नहीं क्या हो गया है?

उमंग ने उत्तर दिया— देख पिंकी ! अब हमें पहले से व सबसे अधिक सावधान रहना चाहिये; पहले से अधिक अच्छी व नियमों का पालन करने वाली होना चाहिये ताकि हमारी सहेली को सफलता मिले । और फिर सहेली की सफलता तो हम तीनों की मित्रता की सफलता होगी न ।

वे तीनों आपस में एक-दूसरे को समझाती रहीं....परन्तु मेरे बहादुर साथियों! हमें याद रखना है कि अच्छे लोग शुरु से ही अच्छाई को संचित (इकट्ठा) करते हैं व हर कदम पर अच्छाई ढूँढ़ते हैं । परन्तु स्वार्थी हर कदम पर अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिये तैयार रहते हैं । कर्म से जी चुराने वाले वातावरण को दूषित करते हैं जबकि कर्मठ लोग सदा सौहार्द को बनाये रखते हैं ।

यह माह बसन्त ऋतु का माह है । बसन्त को ऋतुओं का राजा कहा जाता है । क्योंकि इस मास में गर्मी सर्दी बराबर होती है । इससे मन में उत्साह व उमंग बढ़ती रहती है । इसलिये इस दिन लोग पतंगें उड़ाते हैं व पीले रंग को चहूँ ओर बिखेरते हैं । आओ हम भी इसका स्वागत करें ।

❑ **विनय जोशी**

बाल कथा : कुम्भनाथ शर्मा

सफ़ेद फूल

पवनपुर में रामलाल नामक एक गड़रिया रहता था। उसके पास भेड़-बकरियों के अलावा थोड़ी-सी ज़मीन थी। उस पर वह स्वयं खेती करता था। अपनी मेहनत, परिश्रम एवं ईमानदारी के बल पर उसने काफी धन कमा लिया था।

गड़रिये का एक बेटा था, नाम था उसका रामू। इकलौता बेटा होने के कारण रामू को माँ-बाप का भरपूर प्यार मिला। अधिक लाड-प्यार मिलने के कारण रामू की आदतें बिगड़ गई थीं। स्कूल न जाकर वह दिनभर गाँव के आवारा लड़कों के साथ घूमता रहता था। रामलाल गड़रिया जितना परिश्रमी था रामू उतना ही कामचोर और आलसी। रामू को आटे-दाल का भाव भी मालूम नहीं हुआ था।

एक बार रामलाल गम्भीर रूप से बीमार पड़ गया। धीरे-धीरे उसकी जमा-पूँजी खत्म हो गयी। क्योंकि घर में वही एक कमाने वाला था। रामू पहले दर्जे का कामचोर एवं आलसी था ही। रामलाल की बीमारी ठीक होने की बजाए

बढ़ती ही गयी । एक दिन उसकी हालत बहुत गम्भीर हो गयी । जीवन की अन्तिम घड़ियों में रामलाल ने रामू को प्यार से समझाया–बेटे, तुम प्रतिदिन अपने खेतों की ओर जाते रहना । खेतों में सफ़ेद फूल उगते हैं, वे फूल तुम्हारे पेट भरने के काम आयेंगे ।

कुछ दिन बाद ही राम लाल परलोक सिधार गया । कुछ दिन तो रामू पड़ौसियों से माँगकर अपना पेट भरता रहा । मगर पड़ौसी कब तक साथ देते । कई दिनों तक रामू भूखा-प्यासा बेकार घूमता रहा । किसी काम में उसका मन ही नहीं लगता था । एक दिन जब वह अपने एक पड़ौसी से दुत्कार पाकर घर में बैठा रो रहा था तो उसे अपने पिता के अन्तिम वचन याद हो आये ।

अगले दिन रामू अपने खेतों पर जा पहुँचा । जिस भूमि में राम लाल सोना पैदा करता था उसी भूमि में रामू के कामचोर एवं आलसी होने के कारण खरपतवार एवं झाड़-झंखाड़ उग आये थे । रामू ने पूरे खेतों की खाक छान डाली । मगर उसे कहीं भी सफ़ेद फूल दिखाई नहीं पड़ा ।

उस दिन के बाद से रामू की यही दिनचर्या बन गयी । बड़े सवेरे उठकर वह खेतों की ओर चल पड़ता और सफ़ेद फूल की तलाश में घंटों तक भटकता रहता था । मगर हर बार रामू के हाथ सिर्फ निराशा ही हाथ आती थी ।

एक दिन जब वह उदास और निराश खेतों से वापस घर लौट रहा था तो रास्ते में जगतनारायण से उसका सामना हो गया । जगतनारायण उसके स्वर्गीय पिता के मित्र थे । जगतनारायण ने उसकी कुशलक्षेम पूछी तो रामू का धैर्य टूट गया । उसने रोते-रोते अपनी पूरी राम कहानी कह सुनाई ।

—तुम्हारे पिता ने सच कहा था बेटे, जगतनारायण ने रामू की आँसूओं को पोंछते हुए कहा—मगर अन्तर यह है रामू बेटा। सफ़ेद फूल अब स्वयं नहीं उगते हैं बल्कि उन्हें उगाना पड़ता है और उन फूलों को उगाने के लिए बहुत श्रम, साधना एवं धैर्य की जरूरत पड़ती है। —

—चाचा मैं सब कुछ करने को तैयार हूँ। बस मुझे सफ़ेद फूल चाहिए।

जगतनारायण ने शाबाशी देते हुए उसकी पीठ ठोकी और बहुत सी जरूरी बातें अच्छी तरह से समझा दीं।

दूसरे दिन से रामू अपने काम में लग गया। खेतों की जुताई--गुड़ाई करके उसने कृषि योग्य बनाया और जगतनारायण के कहे अनुसार तैयार भूमि में गेहूँ बो दिया। दिन गुजरते गये। रामू की कठिन मेहनत और परिश्रम आखिर एक दिन रंग ले ही आयी। खेतों में गेहूँ की फसलें लहलहा उठीं। बालियों में नन्हें-नन्हें सफ़ेद फूल अपनी भीनी-भीनी सुगन्ध से वातावरण को महकाने लगे थे।

अपनी लहलहाती फसल को देखकर रामू बहुत खुश होता था परन्तु उसे इस बात का सदा दुःख होता था कि सफ़ेद फूल अभी तक नहीं उगे थे

एक दिन जब वह कड़ाके की सर्दी में फसलों की रखवाली कर रहा था तो जगतनारायण उसके पास आ टपके।

चाचा, मैंने आपके कहे अनुसार प्रत्येक काम किया परन्तु अभी तक सफ़ेद

फूल उगे नहीं ।

जगतनारायण अचानक ठठाकर हँस पड़े— बोले, बेटे इन गेहूँ के बौधों में लगी बालियों की ओर देखो । इन बालियों में जो नन्हें-नन्हें फूल खिल रहे हैं । यही वास्तव में सफ़ेद फूल हैं । अब यही फूल अन्न के दाने बनकर तुम्हारे काम आयेंगे ।

जगतनारायण के मुख से यह सुनकर रामू के दिमाग के कपाट (दरवाजे) एक झटके से खुल गये । उसे अच्छी तरह से मालूम हो गया कि उसके स्वर्गीय पिता ने सफ़ेद फूल का इशारा किस ओर किया था ।

उसके दिमाग में ये बातें अच्छी तरह से आ गयीं । आलसी और कामचोर होने से कुछ काम नहीं चलेगा । जीवन की गाड़ी खींचने के लिए दूसरों की तरह जमकर कठिन परिश्रम और मेहनत करना होगा । उस दिन रामू ने भीगी आँखों से अपने पिता की तस्वीर के सामने प्रतिज्ञा की भविष्य में वह और कड़ी मेहनत और परिश्रम करेगा । उसने सिर उठाकर देखा तो उसे लगा मानो तश्वीर में उसके पिता मुस्करा रहे थे ।

कविता : डॉ. भैरूलाल गर्ग

बसन्त में खिला बगीचा

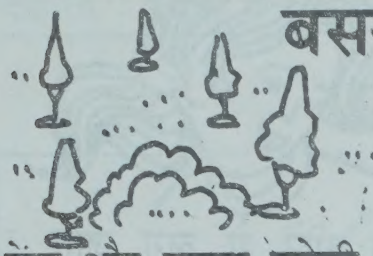

आओ करें बाग की सैर
जिसमें फल फूलों के ढेर

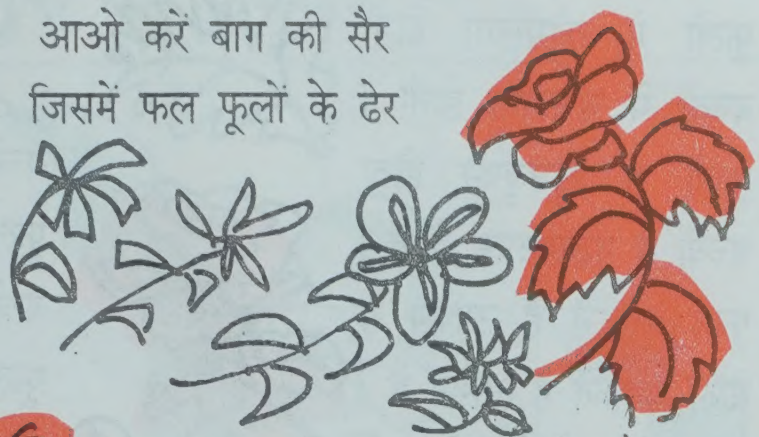

गेंदा और गुलाब चमेली
चंपा और जूही अलबेली
फूल गुलाबी नीले पीले
लगें एक से एक छबीले

नींबू नारगी और आम
काजू पिस्ता और बादाम
है अंजीर अखरोट निराले
जामुन रस के भरे निवाले

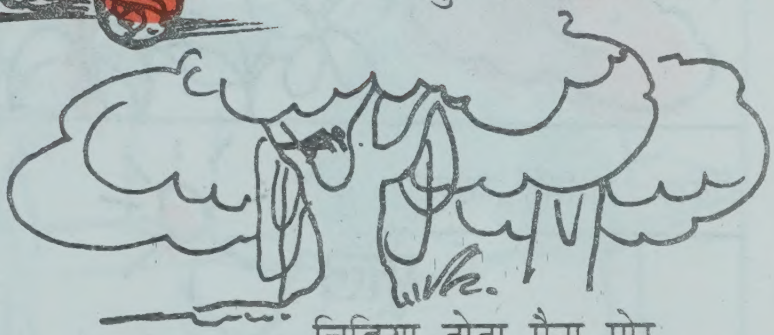

कई किस्म के ऊँचे पेड़
कुछ छोटे कुछ लगें अधेड़
पपीहा पीऊ पीऊ गाये
कोयल मीठा राग सुनाये

चिड़िया तोता मैना मोर
देखें होकर हर्ष विभोर
हरी हरी ज्यों चादर दूब
मखमल से भी कोमल खूब

आओ उछले कूदें घूमें
पंछी कलरव पर झूमें
रखना बस केवल यह ध्यान
नहीं बाग को हो नुकसान ।

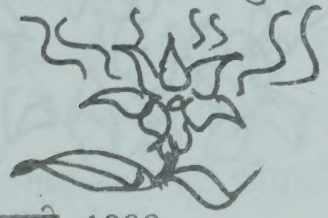

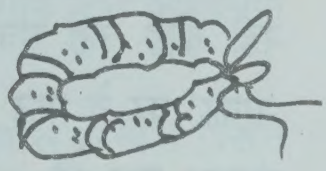

गंध फूल फल खूब लुटाता
लगे बाग ज्यों जीवन दाता ।

कविता : मुन्ना बाज 'मुन्ना'

फूल व बच्चें

फूलों में कोमलता होती
बच्चों में चंचलता होती ।
फूलों में खूश्बूपन होता
बच्चों में नटखटपन होता ।
फूल महकते हैं उपवन में
बाल चहकते हैं आँगन में ।
फूलों को सब तोड़ के सूघें
बच्चों की सब पप्पी लेते ।
फूल अगर गर्दन में आते
बच्चे सीने से लग जाते ।
फूल अगर सुन्दर होते हैं
बच्चे कब कमतर होते हैं ।
फूल हमारा तन महकाते
बाल हमारा मन महकाते ।
फूलों बिन सूनी है बगिया
बच्चों बिन सूनी ये दुनिया
फूल निर्दोष बच्चे हैं भोले
'मुन्ना' अन्तर कहाँ टटोले ।

कविता : हरिसिंह 'हरीश'

फूल

रंग, बिरंगे, सुन्दर, कोमल होते हैं ये फूल ।
बड़े प्रेम से मन के अन्दर सोते हैं ये फूल ।
गर्मी, सर्दी, बरसातों से डरते नहीं कभी भी ।
साहस अपना नहीं कभी भी खोते हैं ये फूल ।
सुख में, दुःख में ये दुनिया के आते हरदम काम,
प्रेमभाव का बीज हमेशा बोते हैं ये फूल ।
गुण ही गुण हैं इनके अन्दर, अवगुण एक नहीं
नहीं कोई कह सकता जग में थोथे हैं ये फूल ।
'एका' का ये पाठ पढ़ायें, जब पुष्प हार बनते हैं ।
बंधकर जब भी इक धागे में पोते हैं ये फूल ।।

कहानी : विनय कुमार मालवीय

गुरु का उपदेश

चन्दनपुर के राजा का एकमात्र पुत्र था वीरसिंह । अत्याधिक लाड़-प्यार के कारण वह काफी शरारती हो गया था । एक दिन वह बाजार जा रहा था तो उसने एक वृद्ध आदमी को लाठी टेकते हुए जाते देखा । उस आदमी को देखते ही उसके मन में शरारत सूझी ।

उसने उस आदमी की लाठी छीनकर फेंक दी । इससे वह आदमी लड़खड़ा कर गिर पड़ा । इस पर वीरसिंह हँसने लगा । उसका यह कार्य राह पर चलते लोगों को बहुत बुरा लगा परन्तु राजकुमार होने के कारण वे उसे कुछ कहने की हिम्मत नहीं कर सके ।

एक दिन वह कहीं जा रहा था । रास्ते में उसे प्यास लगी । उसने साथ चल रहे सेवकों से पानी के लिए कहा । वे लोग कुछ दूर गये और

आकर एक नदी के बारे में बताया। वीरसिंह नदी के किनारे पानी पीने गया तो देखा कि कुछ लड़कियाँ घड़े में पानी लेकर जा रही हैं। उसने पानी पिया और पत्थर का एक टुकड़ा एक लड़की के घड़े पर मार दिया। जिससे घड़ा टूट गया। उस लड़की ने बिगड़ते हुए वीरसिंह से कहा—तुमने मेरे घड़े को क्यों तोड़ा?

मैंने जान-बूझकर पत्थर नहीं मारा था। मैं तो दूसरी ओर पत्थर फेंक रहा था परन्तु वह तुम्हारे घड़े पर लग गया। वीरसिंह ने झूठ बोलते हुए कहा और आगे चल दिया।

उस लड़की ने रानी से जाकर राजकुमार की शिकायत की। रानी ने उल्टा उसे ही डाँटते हुए कहा —तुमने राजमहल में आने की हिम्मत कैसे की? तुरन्त यहाँ से चली जाओ और फिर कभी यहाँ आने की कोशिश मत करना। वरना तुम्हें कड़ी सजा दूँगी।

रानी के गुस्से को देखकर लड़की वहाँ से चली गई। यह बात जब राजा को मालूम हुई तो उन्होंने रानी से कहा—वीरसिंह की आदत दिन-प्रतिदिन बिगड़ती जा रही है। अब उसे सुधारने के लिए कोई उपाय सोचना पड़ेगा।

राजा की बात सुनकर रानी ने कहा— आप वीरसिंह से कुछ नहीं कहिएगा । वह अभी छोटा है, बड़ा होकर सुधर जायेगा । राजा चुप हो गये । शरारत करके घर आने पर किसी की डाँट न सुनने से वीरसिंह की आदत और खराब होती गई ।

एक दिन वह घोड़े पर सवार होकर जा रहा था । रास्ते में एक जगह भीड़ देखकर वह रुक गया । उसने एक आदमी से पूछा— यहाँ भीड़ क्यों लगी है ?

मुझे नहीं मालूम—उस आदमी ने उत्तर दिया ।

तब यहाँ क्यों खड़े हो ? वीरसिंह ने डाँटकर पूछा और एक चाबुक उसे मार दिया । वह आदमी बिगड़ गया । उसने पूछा—तुमने मुझे क्यों मारा ?

मेरा मन—वीरसिंह ने कहा । यह सुनकर उस आदमी ने भी उसे एक हाथ मार दिया । फिर क्या था ? यह देखकर वीरसिंह के साथ चल रहे सेवकों ने उस आदमी को पकड़ लिया । वे लोग उस आदमी को राजा के सामने ले गये और उन्हें पूरी बात बतायी ।

इस पर दरबार के कुछ लोगों ने कहा—चूँकि इस आदमी ने राजकुमार को मारा है। इसलिए इसे कारावास की सजा दी जाए। कुछ सलाहकारों ने कहा —इस आदमी को कोड़ों से मारा जाए।

राजा उन लोगों की बात सुनता रहा। जब सब सलाहकार अपनी-अपनी बात कह चुके तो राजा ने कहा—पूरी बात सुनने से स्पष्ट है कि यह आदमी निर्दोष है। अतः इसे कोई दंड देना उचित नहीं है।

राजा के फैसले को सुनकर सलाहकार कुछ न कह सके। उस आदमी ने राजा को प्रणाम किया और वहाँ से चला गया। उस दिन राजा वीरसिंह के बारे में सोचते रहे। उन्होंने सोचा कि वीरसिंह को राजमहल से दूर किसी आश्रम में पढ़ने के लिए भेजना चाहिए। राजमहल से दूर रहने पर वह कुछ सुधर जाएगा। उन्होंने यह विचार रानी को बताया।

रानी वीरसिंह को राजमहल से बाहर किसी आश्रम में अध्ययन हेतु भेजने के लिए तैयार नहीं हो रही थीं। उन्हें राजकुमार को अपनी आँखों से दूर करने में दुःख हो रहा था। वे चाहती थीं कि महल में ही उसे पढ़ाने के लिए किसी शिक्षक को नियुक्त कर दिया जाए।

परन्तु राजा की इच्छा के आगे उनकी एक न चली। वीरसिंह को एक आश्रम में भेज दिया गया। उसने वहाँ भी उपद्रव करना जारी रखा। गुरुजी ने उसकी शरारतों पर तीन-चार दिन ध्यान नहीं दिया। उन्होंने उसे रोका-टोका नहीं। वीरसिंह ने सोचा कि गुरुजी उसे कुछ नहीं कहेंगे। उससे उसकी शरारतों में वृद्धि होने लगी।

अन्त में एक दिन गुरु जी ने उससे कहा—तुम यहाँ अध्ययन के लिए आये हो, इसलिए तुम्हें जो पाठ पढ़ाया जाए उसे ध्यानपूर्वक सुनकर याद किया करो।

इस पर वीरसिंह ने लापरवाही से कहा —मैं पढ़ता तो हूँ।

–नहीं तुम मन लगाकर नहीं पढ़ते। तुम्हारा ध्यान शरारत में लगा रहता है —गुरु जी ने कहा। गुरु जी का गम्भीर चेहरा देखकर वीरसिंह चुप हो गया।

एक दिन वीरसिंह ने आश्रम में पढ़ने वाले एक लड़के से आदेशात्मक शैली में कहा—मैं स्नान करने जा रहा हूँ, तुम चलकर मेरे लिए कुएँ से पानी निकाल दो।

यह सुनकर उस लड़के ने कहा— मैं नहीं जाऊँगा।

–क्यों नहीं जाओगे?— तुम्हें मेरे साथ चलना होगा—वीरिसंह ने बिगड़ते हुए कहा।

–क्या मैं तुम्हारा नौकर हूँ जो तुम्हारी बात मानूँ ? —उस लड़के ने उत्तर दिया।

–हाँ, तुम मेरे नौकर हो। तुम जानते नहीं, मैं यहाँ का राजकुमार हूँ—वीरसिंह ने कहा। इस पर उस लड़के ने हाथ मटकाते हुए कहा—तुम अपने घर के राजकुमार होगे मेरे लिए नहीं।

उस लड़के की इतनी बात सुनते ही वीरसिंह आग-बबूला हो गया। उसने आव देखा न ताव उसे एक चाँटा मार दिया। इस पर उस लड़के ने भी वीरसिंह को मारा। उन दोनों में मारपीट होते देखकर कुछ लड़के दौड़कर गुरु जी के पास गये और उन्हें इसके बारे में बताया। गुरु जी तुरन्त वहाँ पहुँचे और डाँटकर उन दोनों को अलग किया। उन्होंने उस लड़के से मारपीट का कारण पूछा तो उसने पूरी बात बतायी। फिर गुरु जी ने वीरसिंह से मारपीट का कारण पूछा तो उसने भी वही बात बतायी जो उस लड़के ने बतायी थी।

उन दोनों की बात सुनकर गुरु जी ने वीरसिंह को समझाते हुए कहा—इस आश्रम में कोई छोटा तथा बड़ा नहीं है और न कोई अमीर तथा गरीब है। यहाँ सभी छात्र बराबर हैं। इस आश्रम के हर लड़के को

अपना काम स्वयं करना पड़ता है। किसी छात्र की दूसरे विद्यार्थी के स्नान के लिए कुएँ से पानी निकालकर अथवा उसका कोई काम करना मना है। अगर तुम्हें स्नान करना है तो अपने हाथ से कुएँ से पानी खींचना होगा और अपना वस्त्र भी स्वयं साफ करना होगा। इसमें कोई तुम्हारी सहायता नहीं करेगा।

उनकी बात सुनकर वीरसिंह ने कहा—गुरु जी मैं अपने घर में कोई काम नहीं करता था।

घर की बात छोड़ो। यहाँ तुम्हें ही अपना सब काम करना होगा। अगर तुम अपना कार्य नहीं कर सकते तो आश्रम छोड़कर अपने घर चले जाओ। मैं तुम्हारे कारण आश्रम का नियम नहीं बदल सकता। गुरु जी ने स्पष्ट शब्दों में उससे कहा। अब वीरसिंह कुछ नहीं बोला और चुपचाप नहाने चला गया।

गुरु जी काफी देर तक वीरसिंह के बारे में सोचते रहे। फिर उन्होंने एक शिष्य को, राजा को बुलाने के लिए भेज दिया। राजा के आने पर गुरु जी ने वीरसिंह को बुलाया और उसके सामने पूरी बात बताते हुए कहा—राजन! वीरसिंह की शिक्षा के बारे में अब आपका क्या विचार है?

गुरु जी द्वारा अचानक बुलाये जाने पर राजा के मन में जो आशंका थी, वह सच हुई। वे सोच रहे थे कि वीरसिंह ने जरूर कोई ऐसा कार्य व्यवहार किया होगा, जिसके कारण गुरु जी ने उन्हें बुलाया है। वे कुछ

क्षण चुप रहे। उनके चुप रहने पर गुरु जी ने कहा—राजन! क्या सोच रहे हो अगर वीरसिंह को मेरे यहाँ शिक्षा ग्रहण करनी है तो यहाँ के नियम-कायदे के अनुसार उसे रहना होगा अन्यथा आप उसे अपने साथ ले जा सकते हैं। इसके लिए आप मुझे क्षमा करें।

उनकी बात सुनकर राजा ने कहा—गुरुदेव, मुझे इस विषय में कुछ नहीं कहना है। आप जैसा उचित समझें वैसा करें। मैंने वीरसिंह को आपके पास सभ्य, सुशिक्षित एवं योग्य बनने के लिए भेजा है। मैं इसे अपने साथ नहीं ले जाऊँगा। वह आपके पास ही रहेगा। इ तना कहकर राजा ने गुरु जी को प्रणाम किया और वहाँ से चल दिये। उन्होंने वीरसिंह से कुछ नहीं पूछा।

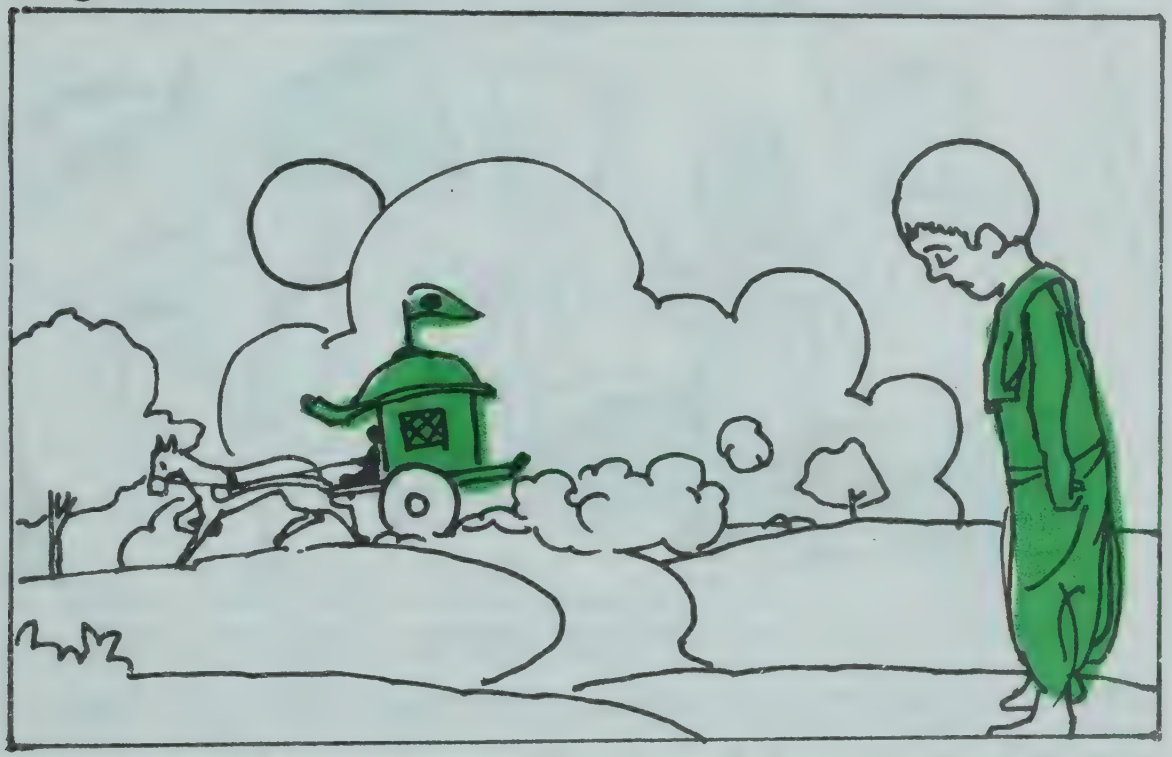

तब छात्रों के सामने राजा के बिना बात किये चले जाने पर वीरसिंह उदास हो गया। उसे अपने पिताजी से ऐसे व्यवहार की बिल्कुल आशा नहीं थी। उसे उदास देखकर गुरु ने पूछा—तुम अपने पिताजी के साथ क्यों नहीं गये। तुम्हें उनके साथ घर चले जाना चाहिए था।

गुरु जी की बात सुनकर अन्य छात्र हँसने लगे। उन लोगों ने हँसते हुए कहा—जब राजा साहब ने इससे कुछ नहीं कहा तो यह कैसे जाता। उन्होंने तो इससे बात तक नहीं की। अगर यह उनके साथ अपने आप जाता तो वे इसे भगा देते।

उन लड़कों की बात सुनकर वीरसिंह कुछ नहीं बोला। और वहाँ से अपनी कुटिया की ओर चल दिया। इस पर गुरु जी ने उसे अपने पास बुलाया तो देखा कि उसकी आँखों में आँसू थे। उन्होंने प्यार से उससे पूछा—तुम क्यों रो रहे हो ?

गुरु जी की प्यार भरी बातें सुनकर वीरसिंह रोने लगा। गुरु जी ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा— चुप हो जाओ। अगर तुम मारपीट करना छोड़ दो और आश्रम के नियमों का पालन करो तो अच्छे लड़के बन सकते हो और फिर राजा साहब तुम्हें अपने साथ घर ले जायेंगे।

वीरसिंह ने कहा —गुरु जी, मुझे माफ कर दीजिये। अब मैं किसी से झगड़ा नहीं करूँगा और आप जैसा कहेंगे मैं वैसा ही करूँगा। यह सुनकर गुरु जी ने उसे अपने सीने से लगा लिया।

इसके बाद वीरसिंह शान्तिपूर्वक रहने लगा और जब आश्रम से शिक्षा ग्रहण कर राजमहल गया तो वह एक सर्वगुण सम्पन्न सुशील और साहसी राजकुमार बन चुका था। ●

कभी न भूलो

प्रस्तुतकर्ता : अवतार सिंह (बुढ़लाडा), हरगुन जसवानी (मण्डला)

- महान व्यक्ति का पहला लक्ष्य उसकी नम्रता है ।
- अपने माता-पिता के मन से निकला हुआ आशीर्वाद जन्म जन्मान्तर तक हमारी रक्षा करता है ।
- रात और सूर्य कभी एक जगह नहीं ठहर सकते ।
- बात थोड़ी करो पर अर्थपूर्ण करो ।
- अपने स्वभाव को खराब करना अपनी किस्मत खराब करना है ।
- ज्ञान का अहंकार दुःखदाई है ।
- सच्ची संवेदना मौन हुआ करती है ।
- साँप आपको तब तक नहीं डसेगा जब तक उसे कष्ट नहीं देंगे ।
- प्यार के लिए सबसे जरूरी वस्तु है इन्सानियत ।
- सेवा से सौभाग्य प्राप्त होता है ।
- सेवा हृदय और आत्मा को पवित्र करती है ।
- वास्तविक स्नेह प्रशंसा से नहीं सेवा से दर्शाया जाता है ।
- फलदार पेड़ सदा झुका रहता है ।
- कड़वे और तीखे शब्द कमजोरी की निशानी है ।
- जिस आदमी ने कभी कोई गलती नहीं की, समझो उसने कोई काम नहीं किया ।
- हिंसा से इन्सान किसी की भी भलाई नहीं कर सकता ।

— निरंकारी बाबा

- पुस्तकों का संकलन ही आज के युग का वास्तविक विद्यालय है ।

— कार्लाइल

- जिसे पुस्तक पढ़ने का शौक है वह सब जगह सुखी रहता है ।

— महात्मा गाँधी

दादा के उत्तर

प्रश्न : दादाजी, दुकानदारी में झूठ का सहारा क्या लेना पड़ता है?

उत्तर : झूठ का नहीं नीति का ।

— सपना झरानी (कूरखेड़ा)

प्रश्न : दादाजी, ज्ञान मिल जाने के बाद भी इन्सान अज्ञानता का ज्ञान क्यों करता है?

उत्तर : वास्तव में उसने ज्ञान लिया ही नहीं होता । स्वार्थ पूर्ति के लिये उसने ढोंग अपनाये होते है । प्रकाश हो जाने पर अन्धकार रह ही नहीं सकता ।

— रामकुमार मेश्राम (बीरूटोला)

प्रश्न : दादाजी, लोग कड़वी सच्चाई को कम और मीठे झूठ को अधिक सुनना पसंद करते हैं ऐसा क्यों?

उत्तर : सच या झूठ कड़वा या मीठा नहीं होता बल्कि सुनने वाले के मुंह का स्वाद बिगड़ा होता है । व्यक्ति स्वयं सच्चा हो तो उसे सत्य ही ठीक लगता है ।

— पंकज मैंहदीरता (गोंदिया)

प्रश्न : गुरु को कैसे खुश किया जा सकता है?

उत्तर : समर्पण भाव से ।

— सीमा माने (लातूर महाराष्ट्र)

प्रश्न : क्या दान ही सबसे बड़ा पुण्य है?

उत्तर : पुण्य और पाप को तुलना में तो है ।

— असमत खान पठान (कुरखेड़ा)

प्रश्न : अगर आदमी की पाँचों उंगलियां बराबर होती तो क्या है?

उत्तर : इतना सुन्दर दिखाई न देता व हाथ इतना उपयोगी भी न रह पाता।

— इस्माईल पठान, इरफान पठान (कुरखेड़ा)

प्रश्न : ऐसा कौन सा सवाल है जिसका जवाब हर व्यक्ति पर अलग-अलग होता है?

उत्तर : आपका व्यक्तित्व ।

— अनिल देलानी (कुरखेड़ा)

प्रश्न : दुनिया में (धन-दौलत) ही सब कुछ नही है । यह जानते हुए भी आज इन्सान धन के पीछे क्यों भाग रहा है ?

उत्तर : अज्ञानता के कारण ।

— पंकज मैंहदीरत्ता (गोंदिया)

प्रश्न : मनुष्य में एक गुण जरूर होता है क्या ये बात सच है?

उत्तर : शत प्रति शत ।

— अनीता झुरानी (कुरखेड़ा)

प्रश्न : इन्सान चाहे तो अपनी किस्मत खुद बना सकता है क्या?

उत्तर : इन्सान किस्मत तो बनाता ही स्वयं है ।

प्रश्न : कहते है कि हर निर्णय सोच-समझकर लेना चाहिए मगर ऐसे वक्त आते है कि जब जिंदगी का फैसला करने के लिए एक सैकड भी नही दिया जाता तब क्या करना चाहिए?

उत्तर : ऐसा मौका कभी नहीं आता, हम ही उतावले हो जाते हैं या डर जाते हैं ।

— सपना झुरानी (कुरखेड़ा)

प्रश्न : दादाजी, महान हस्तो की सेवा के लिए हजारों खड़े रहते हैं और बेसहारों के लिए एक भी नहीं, आखिर क्यों?

उत्तर : लालसा और स्वार्थ के कारण ।

— विजय सचदेवा (दतिया)

प्रश्न : हँसती दुनिया व संत निरंकारी मासिक पत्रिका मे अपनी रचनाएँ भेजने के लिए क्या करना चाहिए?

उत्तर : रचना लिखकर सम्पादक को भेज देनी चाहिए ।

किशोर जसवानी (मण्डला)

प्रश्न : दुनिया में मनुष्य का सबसे पहला और सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्य कौन सा है?

उत्तर : आत्म-चिन्तन ।

प्रश्न : मनुष्य किन कर्मों से सबसे महान बन सकता है ?

उत्तर : परोपकार और मर्यादित जीवन जीने से ।

बहादुर बालिका—कु. शैली खन्ना

प्रस्तुति : डॉ. विद्या श्रीवास्तव

बहादुरी में बालिकाएँ, बालकों से पीछे नहीं है बल्कि यह माना जा सकता है कि कभी-कभी वे लड़कों की अपेक्षा बहुत तेजी से सूझबूझ का निर्णय लेने में सक्षम होती हैं ।

कु. शैली खन्ना एक ऐसी ही बहादुर बालिका है जिसने अपनी जान की परवाह न करते हुए एक नन्हे बच्चे की जान बचायी है । कु. शैली को उसके असाधारण साहस और बहादुरी के लिए 'भारतीय बाल कल्याण परिषद', नई दिल्ली की तरफ से राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार (भरत पुरस्कार) प्रदान किया गया है । यह पुरस्कार उसे गणतंत्र दिवस 97 के अवसर पर माननीय भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री एच डी. देवगौड़ा के द्वारा प्रदान किया गया ।

जिस घटना के लिए कु. शैली को यह गौरव प्राप्त हुआ है उसके अनुसार 7 जून 1995 का दिन था । कु. शैली अपने एक रिश्तेदार श्री गोपाल कृष्ण खन्ना के घर गई हुई थी । एक दिन अचानक उनके घर में आग लग गई । कुछ ही क्षणों में पूरा का पूरा घर आग की लपटों से घिर गया । इस दौरान श्री खन्ना का डेढ़ वर्षीय पुत्र ऋषभ घर के भीतर ही फंस गया था । जब सबको मालूम हुआ तो सब चिल्ला रहे थे । भय से त्रस्त श्रीमती खन्ना मदद के लिए चिल्लाने लगी । काफी लोग वहाँ मूकदर्शक बने हुए खड़े थे, कोई भी बच्चे को आग में से बचाने के लिए आगे नहीं बढ़ा । श्रीमती खन्ना बड़े जोरों से चिल्ला रहीं थीं ।

ऐसे वक्त कु. शैली खन्ना को उसकी अन्तरात्मा ने प्रेरणा दी वह बड़ी तेजी से आग की लपटों को चीरते हुए घर के अन्दर घुस गई । वहाँ धुएँ से भरे हुए कमरे को कु. शैली ने देखा लेकिन धुएं के कारण उसे ऋषभ नजर नहीं आया । घबराहट में कु. शैली घर से बाहर निकल आयी ।

जब श्रीमती खन्ना को कु. शैली को बगैर ऋषभ के देखा तो वह और भी निराश हो गई और मदद के लिए चिल्लाने लगी । श्रीमती खन्ना की हालत खराब देखकर, कु. शैली पुनः घर के भीतर गई । इस बार उसने घर के भीतर ऋषभ को ढूंढ़ने का प्रयास किया । इस बार आग की लपटों में उसे ऋषभ दिखलायी दिया । कु. शैली

→

गीता चौपड़ा वीरता पुरस्कार पाने वाली वीर बालिका : कु. मेकल सुतासिंह

प्रस्तुति : डॉ. विद्या श्रीवास्तव

बहादुर बच्चों की बातें ही निराली हैं । वे समय-समय पर अपनी बहादुरी और शौर्य का प्रदर्शन करते रहते है । ऐसी ही एक वीर बालिका है म. प्र. के होशंगाबाद जिले की रहने वाली कु. मेकल सुतासिंह । जिसने अपनी सूझबूझ और बहादुरी से एक बालिका के प्राण बचाए हैं । उसकी इस बहादुरी के लिए भारतीय बाल कल्याण परिषद, नई दिल्ली की ओर से तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री एच.डी.देवगौड़ा जी ने "गीता-चौपड़ा राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार" प्रदान किया है।

जिस घटना के लिए कु. मेकल सुतासिंह को पुरस्कार मिला है उसके अनुसार कु. मेकल सुतासिंह 31 मई, 95 के दिन नर्मदा नदी में स्नान करने गई । अचानक उसने देखा कि कोई मदद के लिए चिल्ला रहा है । जब उसने नदी की ओर देखा तो एक 16 वर्षीया लड़की कु. जयश्री गहरे पानी मे डूब रही थी ।

कु. मेकल सुतासिंह स्वयं तैरना नही जानती थी, लेकिन उसने एक क्षण का भी समय गुजारना ठीक नहीं समझा । वह फौरन पानी में कूद गई वह जैसे ही जयश्री के नजदीक पहुँची मेकल सुतासिंह को उसने कुछ इस तरह पकड़ा दोनों लड़कियाँ पानी में डूबने लगीं ।

बड़े प्रयासों के बाद मेकल सुता ने अपने आपको मुक्त किया । लेकिन कुछ ही क्षणों में फिर से जयश्री ने मेकल सुता के बालों को पकड़ लिया । इस प्रकार फिर दोनों लड़कियाँ पानी में डूबने लगीं । अबकि बार कु. मेकल सुता ने जोर से धक्का मारकर

→

→

ने तुरन्त ऋषभ को अपने साथ लिया और घर से बाहर आ गई । कु. शैली की हालत भी धुएं की वजह से खराब हो रही थी । उसे सांस लेने मे दिक्कत हो रही थी । थोड़ी देर बाद कु. शैली खुला सामान्य हो सकी । इस प्रकार उसने प्राणों की परवाह न कर बच्चे के प्राण बचाए ।

एक अनोखा टेलीफोन : वीडियोफोन

2 जून सन 1875 । संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के विख्यात वैज्ञानिक अलेक्जेंडर ग्राहमबेल टेलीग्राफ से सम्बन्धित एक प्रयोग कर रहे थे । उनके सहयोगी टॉमस वाटसन दूसरे कमरे में अपने सामने बिखरे हुए यन्त्रों से उलझे हुए थे । टॉमस वाटसन ने सामने रखी हुई लोहे की पत्तियों के कम्पन एवं ध्वनि सम्बन्धी प्रयोग की व्यवस्था की थी कि अचानक ग्राहमबेल उनके कमरे में दौड़ते हुए आये । उन्होंने अपने रिसीवर पर कुछ संकेत ग्रहण किये थे । ग्राहमबेल ने देखा, कि यदि लोहे की पत्ती को चुम्बक के बीच में कम्पन कराया जाये तो विद्युत धारा बहने लगती है । इसी सिद्धान्त के आधार पर 10 मार्च 1876 को उन्होंने विश्व का प्रथम टेलीफोन बनाने में सफलता प्राप्त की।

टेलीफोन के आविष्कार को एक शताब्दी से अधिक का समय हो गया है । इस बीच इसमें अनेक विलक्षण परिवर्तन किये गये है । अमेरिका के जे. स्मिथ ने विश्व का सबसे छोटा टेलीफोन बनाया । यह मात्र 1.90 से.मी. लम्बा, 3.81 से.मी. चौड़ा और 10.48 से.मी. ऊँचा था । ➜

➜

कु. जयश्री को अपने आपसे अलग कर दिया । कु. मेकल सुतासिंह के धक्के से जयश्री उथले पानी में पहुँच गई । लेकिन स्वयं कु. मेकल सुता पानी में डूबने लगी ।

कु. मेकल सुता को पानी में डूबता हुआ देखकर नरेन्द्र सिंह नाम का एक व्यक्ति तुरन्त पानी में कूदा । नरेन्द्र सिंह स्वयं नर्मदा नदी में स्नान करने आया था । नरेन्द्र सिंह ने तुरन्त ही कु. मेकल सुता को पकड़कर पानी से बाहर निकाला। तब तक कु. मेकल सुता की हालत काफी गम्भीर हो गई थी । उसे चिकित्सा हेतु अस्पताल ले जाया गया । थोड़ी देर बाद ही मेकल सुता को होश आ गया।

इस प्रकार कु. मेकल सुतासिंह ने अपनी सूझबूझ और सामयिक प्रयास से एक बच्ची के प्राण बचाए । कु. मेकल को जब वीरता का पुरस्कार मिला तो वह बड़ी खुश थी, उसे देश के प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति से मिलने का अवसर मिला । उसे दिल्ली में अनेक मंत्रियों और राष्ट्रीय नेताओं से मिलने का अवसर मिला । अनेक संस्थाओं ने भी उसको पुरस्कार व प्रमाणपत्र प्रदान किए है । ●

लेख : अभिनंदन

एक अद्भुत पक्षी : कीवी

न्यूजीलैंड के विभिन्न द्वीपों में पाया जाने वाला पक्षी कीवी विलक्षण प्राणी है। इसका शरीर मटमैले भूरे रंग का होता है तथा इस पर भूरे रंग के मुलायम नमकदार बाल होते हैं। कीवी के डैने बहुत छोटे होते है, अतः यह उड़ नहीं सकता। कीवी एक बड़े जंगली मुर्गे के बराबर ऊँचा होता है। सामान्यतया इसकी ऊँचाई पैंतालिस से पचास सेन्टीमीटर तक होती है। कीवी के पूँछ नहीं होती तथा चोंच काफी लम्बी होती है। इसी चोंच के सिरों पर नासिका रन्ध्र होते हैं। ये नासिका रन्ध्र कीवी को भोजन की तलाश में विशेष रूप से सहायता करते है। कीवी का प्रमुख भोजन जमीन पर रेंगने वाले छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़े तथा केंचुए हैं। इन्हें पाने के लिए वह अपनी घ्राण शक्ति का प्रयोग करता है तथा जमीन के भीतर छोटे-छोटे बिलों और छेदों में चोंच डालकर केंचुओं तथा अन्य कीड़ों-मकोड़ों को बाहर निकाल लेता है।

पक्षी विशेषज्ञों का मत है कि कीवी अपनी प्रवृत्ति से आलसी था। इसे सूर्य का प्रकाश पसन्द नहीं था अतः यह सारे दिन जंगलों में किसी सुरक्षित स्थान पर आँखें

➜

➜

मार्च 1990 में पश्चिमी जर्मनी की एक व्यवसायिक संस्था ने मल्टी फंक्शन टेलीफोन ए-9 तैयार किया, जो बाहर से आए हुए टेलीफोन रिकार्ड करता है, समय व दिनांक नोट करता है तथा सभी तथ्यों को एक कम्प्यूटर में भेज देता है। इस टेलीफोन के द्वारा घर के सभी इलैक्ट्रानिक उपकरणों को नियन्त्रित किया जा सकता है।

सन् 1971 में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका ने एक ऐसा टेलीफोन बनाया, जिसमें फोन पर बातें करने वाले दोनों व्यक्ति एक-दूसरे को देख भी सकते थे।

फिनलैंड का टैक्नीकल रिसर्च सेन्टर टेलीफोन के विकास पर कई वर्षों से कार्य कर रहा था। अन्त में उसे एक विलक्षण टेलीफोन बनाने में सफलता मिली। जिसका नाम था—विडीयोफोन। वीडियोफोन यूरोप का प्रथम टेलीफोन था, जिसमें टेलीफोन पर बातें करने वाले दोनों व्यक्तियों के रंगीन चित्र भी एक- दूसरे के सामने रहते थे। वीडियो फोन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके लिए कोई अलग से टेलीफोन लाइन नहीं लेनी पड़ती है और न ही किसी अन्य उपकरण की आवश्यकता होती है इसे साधारण टेलीफोन की लाइन पर ही प्रयुक्त किया जा सकता है। ●

बन्द किये पड़ा रहता था और रात में भोजन की तलाश में निकलता था। इसका परिणा यह हुआ कि इसके पंखों की उड़ने की क्षमता ही नहीं समाप्त हो गयी बल्कि इसम टाँग भी इतनी कमजोर हो गयी कि इसे अपने पास का भी प्राणी ठीक से दिखाई न पड़ता है।

कीवी एक अत्यन्त डरपोक तथा शर्मीला जीव है तथा जंगलों में नमी वाले भा में रहना अधिक पसन्द करता है। रात्रि में भोजन की खोज करते समय शत्रु के निक होने पर यह उसका सामना नहीं करता, बल्कि एक विचित्र प्रकार की आवाज कर हुआ डरकर भागता है। केचुओं और कीड़ों-मकोड़ों के अतिरिक्त इसे रसदार फ बहुत पसन्द हैं।

कीवी अपना घोंसला जमीन पर ऊँचे स्थान पर बने बिलों में बनाता है। य मादा कीवी एक बार में एक से तीन तक सफेद रंग के अंडे देती है। ये अंडे काफ बड़े तथा भारी होते हैं। कभी-कभी इनका वजन आधा किलो तक होता है। शुतुरमुर्ग रिया तथा कैसोवरी के समान अंडे सेने का काम नर कीवी करता है। इन अंडो बच्चे निकलने में ढाई से तीन माह तक का समय लगता है। बच्चों की परवरिश क कार्य भी नर कीवी करता है। वह इनकी तब तक देखभाल करता है जब तक कि आत्मनिर्भर नहीं हो जाते।

क्या आप जानते हैं?

- साहिल ग्रोवर (गोहतक

- ध्रुवीय पेंग्विन एक ऐसा पक्षी है जो महीनों तक बिना कुछ खाये पीये रह सकता है।
- अमेरिका का कंगारू रैट एक ऐसा जन्तु है जो जिंदगी भर बिना पानी पिये जीता है।
- 'हरियल पक्षी' जमीन पर पैर नहीं रखता। (उ.प्र. में पाया जाता है)
- 'फ्रांस' विश्व में ऐसा देश है जहाँ मच्छर नहीं पाये जाते।
- विश्व में सबसे छोटी चिड़िया 'हमिंग' है। यह क्यूबा में पाई जाती है
- 'योगिनी अली' आस्ट्रेलिया का एक ऐसा व्यक्ति है जो सिर्फ सर्प का ही भोजन करता है।

किताब

ज्ञान की है खान किताब ।
है बड़ी गुणवान किताब ।।
सच्चा धन भरा है इसमें,
है बहुत धनवान किताब ।
साथ बताती जीवन का ये,
है पूरी विद्वान किताब ।
प्रश्न पहेली या उलझन,
सबका ये समाधान किताब ।
पढ़ो, गुणों सारे ही इसको ,
सभी की है ये शान किताब ।

मैडम की सीख

भारी भरकम बस्ता लेकर
मोनू चला स्कूल ।
लेकिन कॉपी और पैन्सिल
घर पर आया भूल ।
प्यार किया उसको मैडम ने
फिर समझाया यूँ :
बिना हथियार युद्ध में जाना
होता है फिजूल ।
बात समझ में आई उसके,
गलती करी कबूल ।
बोला माफ कीजिये मैडम,
फिर न होगी भूल ।

बाल कहानी : नरेन्द्र सिंघवी

झूठी शान आफत में जान

अविनाश आज उदास मन से स्कूल से घर लौटा। उसकी ऐसी सूरत देखकर माँ ने सोचा— स्कूल में किसी से झगड़ा हो गया है या अध्यापक जी ने पढ़ाई के बारे में मारा है? पता नहीं वह आज क्यों उदास है?

मम्मी के मन में तरह-तरह के प्रश्न उठने लगे।

अविनाश के सिर पर हाथ फेरते हुए फिर पूछा—क्या बात है बेटा, आज उदास कैसे बैठे हो ?

मम्मी का इतना कहना था कि अविनाश की आँखों से आँसू लुढ़कने लगे।

मम्मी ने सांत्वना देते हुए पूछा—क्या अध्यापक जी ने मारा है? या किसी से झगड़ा हो गया? मैंने तो तुम्हें कभी उदास नहीं देखा।

—नहीं मम्मी, आज मेरे दोस्त अशोक, अजय, विजय ने मेरी खिल्ली उड़ाई है.।—अविनाश ने सुबकते हुए कहा।

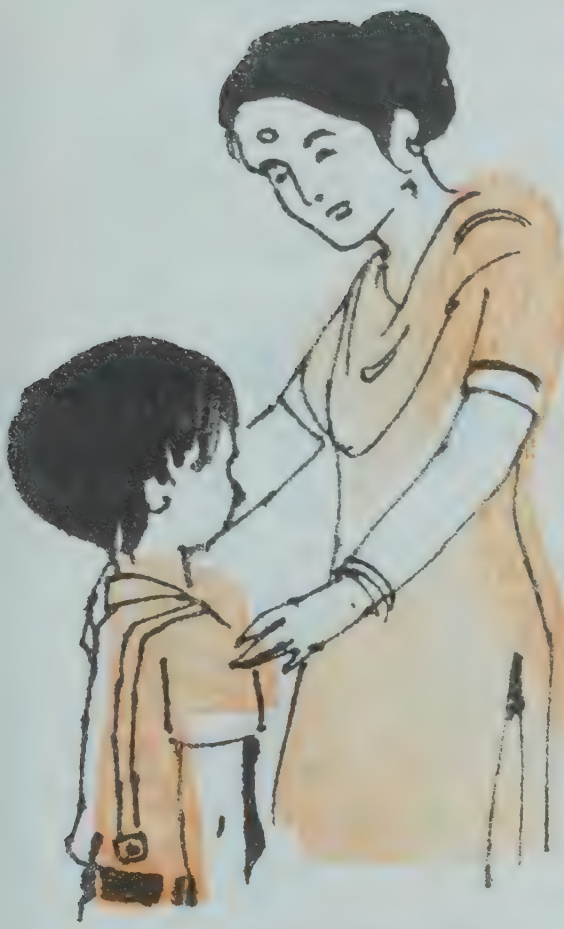

—क्यों ? — माँ ने पूछा ।

वे सभी स्कूल में खाने के लिए पाँच-पाँच, दस-दस रुपये लाते हैं । आज मैं भी उनके साथ था, मैंने भी कैंटीन वाले से पचास पैसे की चीज देने को कहा तो दोस्तों ने कहा—कंजूस पिता का कंजूस बेटा—अविनाश ने एक ही सांस में अपनी बात पूरी कर दी ।

—बेटा इसमें रोने की क्या बात है ? कल से उनका साथ छोड़ दो । —मम्मी ने स्थिति को समझाते हुए कहा । —आओ अब खाना खाते हैं ।

अविनाश ने खाना खा लिया । लेकिन अभी तक उसका मन शांत नहीं हुआ था । वह स्कूल से मिला होमवर्क करके खेलने निकल गया । खेलने के बाद जब घर आया तो पापा आफिस से आ चुके थे । उसने पापा से कोई बात नहीं की । उदास मन से पढ़ने बैठ गया । अभी तक स्कूल वाली बात उसके दिमाग में घूम रही थी ।

रात को सब सो चुके थे, लेकिन अविनाश की आँखों में नींद कोसों दूर थी । वह दोस्तों के साथ बराबर में खड़ा होना चाहता था । यदि दोस्त पाँच रुपये खर्च करते तो वह भी पाँच रुपये खर्च करना चाह रहा था । वह रात में इसी सोच में डूबा था कि उसके

दिमाग में एक तरकीब आ गई । वह खुशी से झूम उठा । उसने मम्मी की गुल्लक से चुपचाप पाँच रुपये निकाल लिए । अब तो अशोक, अजय, विजय के साथ उसकी अच्छी पटने लगी । अविनाश रोज मम्मी की गुल्लक से पाँच रुपये निकाल लेता । उसकी मम्मी को इस बात का पता नहीं चला । क्योंकि गुल्लक में उन्होंने कभी हाथ डालकर नहीं देखा था ।

स्कूल में बोर्ड के फार्म भरने शुरु हो गये थे तथा इस बार अविनाश भी हाई स्कूल बोर्ड का विद्यार्थी था । उसे फार्म के साथ फीस भी जमा करनी थी । वह मम्मी के पास जाकर बोला—मम्मी कल मुझे एक सौ पचास रुपये दे देना, क्योंकि कल मैं बोर्ड की फीस जमा करुँगा तथा कुछ किताबें भी लानी है । मम्मी ने हाँ कहकर सिर हिलाया और काम में लगी गई ।

अगले दिन अविनाश ने स्कूल जाते समय मम्मी से रुपये माँगे, अविनाश की मम्मी कमरे में गई और गुल्लक उठा लाई, उसमें से पैसे

देने लगी। उसमें कम पैसे पाकर बोली—अरे, यह क्या, 35 रुपये ही?

अविनाश का मुँह पीला पड़ गया, वह बोला— और क्या इसमें इतने ही पैसे होंगे।

अविनाश की माँ ने कहा—नहीं बेटा! मैंने तो इसमें कुछ दिन पहले ही 200 रुपये रखे थे और वो भी तुम्हारी स्कूल फीस के लिए। क्या तुमने तो नहीं लिये?

अविनाश का सिर शर्म से नीचे झुक गया। वह सुबक उठा—मम्मी, मुझे क्षमा कर दो। मम्मी, मैंने ये पैसे मित्रों के सामने शान दिखाने के

लिये चुराये थे। मुझे माफ कर दो। अविनाश ने सच्चाई बयान करते हुए कहा।

अविनाश को अपनी गलती का अहसास हो चुका था। इसलिए उसके मम्मी-पापा ने उससे कुछ नहीं कहा। अविनाश की फीस का इंतजाम पापा ने उधार लाकर कर दिया। अविनाश ने मम्मी-पापा से वायदा किया कि वह अब कभी झूठी शान नहीं दिखाएगा और सदैव सच्चाई का सामना निडरता के साथ करेगा। ■

कहानी - विनय जोशी
चित्रांकन - रितेश
पूसी सो कर उठी
बिस्तर पर ही लेटे
लेटे देखा -
ये परदे, पीले
रात को तो!....
उठकर रसोई में जाती है -
माँ - ये हलवा....
पीला....
हाँ जल्दी करो...
नहा लो - आज
वसन्त है न..
पर माँ तुमने
आज साड़ी
भी पीली
ही....
हाँ... पूसी आज
बसन्त ऋतु है -
इसमें सब ओर
पीला ही पीला
होता है!

ठीक है - मैं भी बसन्त मनाऊँगी - सब ओर पीला रंग बिखरेगा !
माँ बुलाती रह जाती है। पर पूसी जोर से -
टाटा... मैं अभी आई !
पार्क में -
चिड़ियाँ व छोटे पक्षी उड़ रहे हैं, गीत गा रहे हैं। पीले रंग का कुछ न कुछ सभी के पास अवश्य है।

मैं पीला रंग किस प्रकार लगाऊँ यहाँ तो सभी बसन्त मना रहे हैं!
वह उदास हो जाती है तभी –
अरी पूसी - आज के दिन उदासी क्यों ?
मैं लापरवाह हूँ न! ये भी नहीं जानती - आज क्या दिन है जबकि बाकी सभी लोग खुशियां मना रहे हैं!

बसन्त : ऋतुओं का राजा है। आज गर्मी-सर्दी बराबर है, शरीर निरोगी है - इसीलिये मन में उत्साह व खुशी है *

पंडित हीरालाल

रायगढ़ शहर में शायद ही कोई ऐसा होगा जो पंडित हीरालाल को नहीं जानता हो । रायगढ़ ही नहीं बल्कि उस इलाके के सभी छोटे-बड़े गाँवों में भी पंडित हीरालाल मशहूर हैं । भला ऐसे सर्वव्यापी व्यक्ति का परिचय किससे न हो । वैसे ये जानते कुछ नहीं और न ही करते कुछ हैं फिर भी ऐसे नजर आते हैं जैसे बहुत व्यस्त हों ।

मुहल्ले में किसी के घर शादी हो तो पं. हीरालाल के बगैर रस्म ही पूरी नहीं होती, कहीं हवन या सत्यनारायण कथा हो तो पं. हीरालाल को दक्षिणा दिए बगैर पुण्य ही नदारद, किसी की जन्म-कुण्डली बनवाना हो तो बस एक ही नाम उभरता है पं. हीरालाल । मतलब यह कि हर काम में पं. हीरालाल अग्रणी ।

और तो और किसी की मृत्यु हो तो मरते ही बांस, हणिया और श्राद्ध का सम्पूर्ण सामग्री लेकर पं. हीरालाल प्रकट । और जनाना जुलूस में सबसे आगे दाह-कर्म के लिए सबके घर जाकर लकड़ी इकट्ठे करने का श्रेय पं. हीरालाल को ही जाता है । अंतिम संस्कार के बाद मृतक परिवार को तुलसीदास के दोहे-चौपाई का पदान्तर देकर समझाने में पं. हीरालाल माहिर ।

कहीं जलसा या कोई कार्यक्रम हो तो स्टेज में जाकर माइक पर जबरदस्ती बरसात के मीडियम वेव की तरह थरथराते गले से लोगों को

संबोधन करना पं. हीरालाल के लिए आम बात हो गई ।

पं. हीरालाल के इस जबरदस्ती महत्वपूर्ण बनने की कोशिशों के लोग आदी हो गये हैं । इसलिए हर कार्यक्रमों में पं. हीरालाल की उपस्थिति को आवश्यक समझने का चलन बना बैठे हैं ।

पं. हीरालाल की आप इसे विशेषता माने या बुराई । पान खूब खाते हैं । डबल नहीं बल्कि इकट्ठा तीन पान एक साथ मुँह में ठूँस लेते हैं ।

पं. हीरालाल शंकालु प्रवृत्ति के होने के कारण शकुन-अपशकुन पर ज्यादा ध्यान देते हैं । कहीं जाते वक्त किसी ने छींक दिया या स्वयं को छींक आ जाये तो तुरन्त मन में शंका पैदा हो जाती है —हो न हो आज कोई अशुभ घटने वाला है । लेकिन उनके पास अपशकुन का भी अपना एक इलाज है । तुरन्त थोड़े से गंगाजल हथेली में लेकर शरीर पर छींड़कने के साथ थोड़े से जल हलक में उतार लेते हैं फिर क्या! अपशकुन दूर ।

एक दिन नहाए-धोए किसी यजमान के यहाँ दावत में जाने के पूर्व मट्ठा पी रहे थे कि एक जोरदार छींक आई । हाथ से गिलास छूट गया और

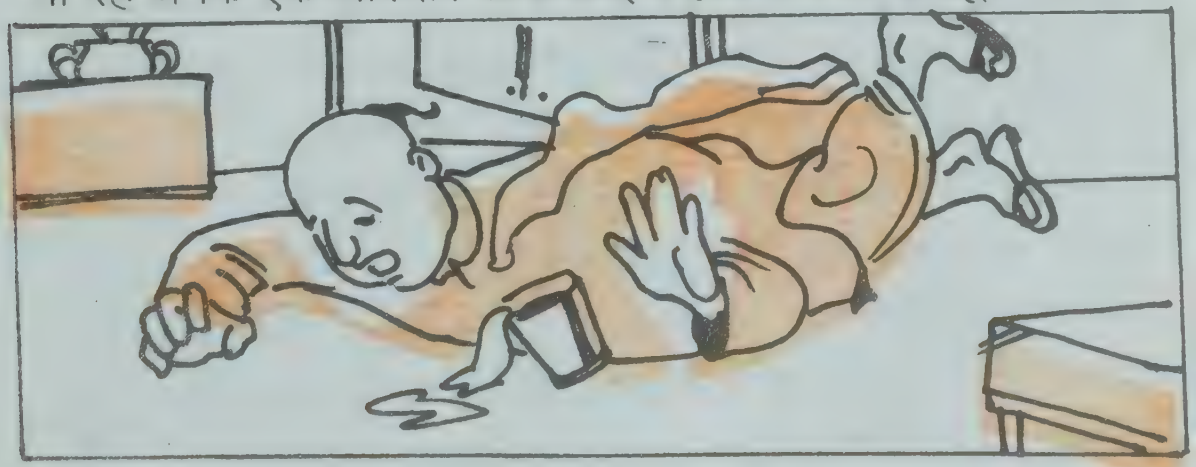

धम्म से फर्श पर गिरकर चकनाचूर हो गया। फिर क्या था अपशकुन दूर करने का इलाज याने शरीर पर गंगाजल छिड़कना शुरु। अभी एक ही अपशकुन का इलाज पूरा नहीं कर पाये थे कि एक काली बिल्ली सामने से गुजरी। अब तो उनका गुस्सा सौ अंश डिग्री पर चढ़ चुका था।

बिल्ली पर अपना सारा गुस्सा उतारने के लिए दरवाजे के ओट हो लिए और बिल्ली की प्रतीक्षा करने लगे। इसी बीच बिल्ली दूर से आती दिखाई दी। बिल्ली जैसे ही नजदीक आई बस प. हीरालाल अज़रुद्दीन के स्टाइल में छक्का मारने के लिए पैर ज्यों ही घुमाए कि उल्टे पं. हीरालाल का पैर दरवाजे से इतनी बुरी तरह टकराया कि लंगड़ा ही गए। महीनों अस्पताल के जनरल वार्ड में तीन सौ सत्रह नम्बर बैड की शोभा बढ़ाते रहे।

पं. हीरालाल बिस्तर पर पड़े-पड़े फैसला किया कि चाहे अब बिल्ली रास्ता काटे या छींक आये, उस पर ध्यान नहीं देना है।

जो हर कार्यक्रम में उपस्थित रहते थे, वही पं. हीरालाल लंगड़ा हो जाने से सभी कार्यक्रमों में नदारद रहते हैं।

वैसे यदि चाहते तो पं. हीरालाल लंगड़ाते हुए हर कार्यक्रम की शोभा बढ़ा सकते हैं, किन्तु अब उन्हें इस बात की चिन्ता है कि लोग पंडित हीरालाल के बजाय कहीं पंगु हीरालाल न कहने लगें। ◆

कहानी : परशुराम संवल

दयालु बालक

रोलफोनस् नाम का एक फ्रांसीसी बालक था। उसे जंगली जानवरों से, विशेषकर पक्षियों से बहुत प्रेम था। सबसे अधिक प्रेम वह आकाश में गाती हुई उड़ने वाली लार्क नाम की चिड़िया से करता था। यहाँ तक की उसने अपने आंगन में भी चिड़ियों के दाना पानी चुगने की व्यवस्था कर रखी थी। चिड़िया आंगन में निडर होकर चहकती, फुदकती और चूं चूं करके दाना चुगती। रोलफोनस् को वह अपना सच्चा मित्र और हितैषी समझती थीं। वह भी उनसे बहुत प्यार करता था। लार्क की संगीतमय वाणी तो उसे मंत्रमुग्ध कर देती थी।

एक दिन वह रास्ते में जा रहा था। तभी अचानक उसे लार्क का संगीतमय स्वर सुनाई पड़ा। उसने इधर उधर निगाह घुमाई तो देखा कि एक चिड़िया बेचने वाला एक बड़ा-सा पिंजरा लिये जा रहा है। उसी पिंजरे में कैद लार्क गाना गा रही थी। रोलफोनस् को लगा कि उसके गाने में दुख और करुणा भरी है। वह चिड़िया बेचने वाले के समीप आया और बोला--महोदय, तुमने इस चिड़िया को कैद क्यों कर रखा है? यह बहुत दुखी लगती है, इसे छोड़ क्यों नहीं देते?

चिड़िया बेचने वाले ने उत्तर दिया--'मैंने इस चिड़िया को पकड़ा है। यहाँ के लोग इस चिड़िया का मांस पहुत पसंद करते हैं। इसीलिये मैं इसे यहाँ बेचने के लिये लाया हूँ। मुझे इसके काफी पैसे मिलेंगे।

लड़के ने चिड़िया के दाम पूछे। चिड़िया बेचने वाले ने जितने पैसे उसे बतलाये उतने पैसे उस समय उसके पास नहीं थे। लड़के ने चिड़िया बेचने वाले से निवेदन किया--कृपया आप यहाँ कुछ देर ठहरिए मैं अभी घर से पूरे पैसे लेकर आता हूँ। कहकर लड़का घर की ओर दौड़ पड़ा।

दोपहर का समय था। धूप तेज थी। वह दौड़ते दौड़ते थक गया। उसकी सांस फूल रही थी।

वह घर पहुँचा तो पता चला कि मम्मी घर पर नहीं है। वह किसी काम से बाहर गई हुई है। लौटने में अभी बहुत देर है। यह जानकर बालक को बड़ा दुःख हुआ। वह सोच में पड़ गया। उसे चिन्ता थी कि चिड़िया बेचने वाला तब तक उसका इन्तजार नहीं करेगा। बेचारी लार्क किसी के हाथों बिककर मारी जाएगी।

तभी उसे अचानक दयालु पादरी जैक्कस की याद आई। वह तुरन्त उनके घर की ओर दौड़ पड़ा। धूप अभी भी बहुत तेज थी। भागते-भागते उसके सिर में तेज दर्द हो रहा था। फिर भी उसने कोई परवाह नहीं

की । पादरी महोदय के पास पहुँचकर उसने सारी कहानी उन्हें एक सांस में कह सुनाई । उसने करुण और रुआंसे स्वर में निवेदन किया -- मुझे चिड़िया को आजाद कराने के लिये पैसों की शीघ्र आवश्यकता है । यदि पैसे न मिले तो लार्क के प्राण बचने सम्भव नहीं है ।

दयालु पादरी बालक का पक्षियों के प्रति इतना प्यार और दयाभाव देखकर गद्‌गद्‌ हो उठे । वह जेब से पैसे निकालकर बालक को देते हुए बोले--देखो बेटे! तुम्हारे चेहरे से लगता है कि तुम इस कड़ी धूप में दौड़कर बीमार हो गये हो । मैं तुम्हें इस शर्त पर रुपये दे रहा हूँ कि तुम चिड़िया खरीदकर तुरन्त सीधे घर जाओ और आराम से पलंग पर लेटकर विश्राम करो ।

बालक ने जल्दी से शर्त स्वीकार कर ली और रुपये लेकर एकदम चिड़िया बेचने वाले की ओर दौड़ पड़ा । जब वह वहाँ पहुँचा तो उसने देखा कि एक मोटी सी स्त्री लार्क को खरीदने के लिए मोल भाव कर रही थी । बालक ने बिना कुछ कहे सुने ही चिड़िया बेचने वाले के हाथ में रुपये थमाकर पिंजरा झपट लिया । लार्क खुशी से चहक उठी, मानों उसे प्राण रक्षक मित्र मिल गया हो । वह पिंजरा लिये हुए घर पहुँचा । किन्तु तपती धूप में दौड़ने और अत्यधिक थकान के कारण वह बेहोश होकर घर के दरवाजे पर ही गिर पड़ा ।

पादरी महोदय को दयालु बालक के स्वास्थ्य की बड़ी चिन्ता थी । वह उसे देखने के लिए घर गये ।

बालक की माँ पलंग के सिरहाने बैठी बेहोश बालक की चिन्ता में आँसू बहा रही थी ।

पादरी ने उसे धीरज बंधाया--घबराओ नहीं बहन! जो दूसरों के प्राणों की रक्षा करता है, भगवान स्वयं उसकी रक्षा करते हैं । देखना थोड़ी ही देर में बालक बिल्कुल स्वस्थ हो जायेगा ।

कुछ देर बाद बालक ने धीरे धीरे आँखे खोली--लार्क चिड़िया का पिंजरा उसके सिरहाने रखा था । चिड़िया ऐसा मीठा और स्नेह भरा गीत गा रही थी, जैसे परमेश्वर से प्रार्थना कर रही हो कि हे प्रभु! मेरे मित्र, मेरे शुभचिन्तक को जल्दी से जल्दी भला चंगा कर दो ।

थोड़ी देर के पश्चात् बालक स्वस्थ हो गया । उसके होठों पर प्रसन्नता भरी मुस्कुराहट थी, वह धीरे से उठा और पिंजरा उठाकर खिड़की के पास ले गया । फिर उसने पिंजरे का दरवाजा खोल दिया । चिड़िया गाती हुई मुक्त आकाश में बालक को कोटि-कोटि धन्यवाद देते हुए उड़ गई ।

बालक प्यार से उसे निहार रहा था ।

डॉ. अंकल के उत्तर

❑ डॉ. कुन्दन कुमार

— लगभग 20 पाठकों के पत्र

प्रश्न : याददाशत बहुत कमजोर है । याददाशत बढ़ाने के लिए बढ़िया सुझाव दें?

उत्तर : ब्राह्मी बूटी, आंवला, बड़ी इलाइची व मिश्री सभी को बराबर भाग लेकर कूटपीसकर कपड़छान कर लें । आधा चम्मच सुबह-शाम पानी से लें । शीघ्र लाभ होगा ।

— केवल सिंह रोड़ी (सिरसा) शशी लाम्बा (खरड़)

प्रश्न : डॉ. अंकल चेहरे पर बहुत छाइयाँ हैं जो कि कभी-कभी बहुत बुरी लगती हैं हमने इस का इलाज भी करवाया पर कोई फर्क नहीं पड़ता। कृपया कोई उपाय बताएँ ?

उत्तर : खीरा, टमाटर का रस बराबर भाग मिलाकर रात को सोते समय चेहरे पर लगाएं । सुबह गाय के कच्चे दूध से धो दें लाभ होगा।

— लगभग 10 पाठकों के पत्र

प्रश्न : दाँतों की कई किस्म की बीमारियाँ हैं जैसे कीड़ा लगना, खून निकलना, दाँतों का हिलना, पायरिया, मुँह से बदबू आना, दाँतों का पीला पड़ना, दाड़ें खोखली होना, मसूड़े कटना आदि इन्हें कोई घरेलू उपाय बताएँ?

उत्तर : पायोकिल दन्त मंजन, सेंधा नमक, पीसा कोयला व फोरहंस टूथ पाउडर, सभी बराबर भाग लेकर मिलाकर शीशी में भरकर रख लें। सुबह-शाम मंजन करें सभी बीमारियों के लिए रामबाण है ।

— रमण ग्रोवर (रतिया)

प्रश्न : डॉ. अंकल क्या तुलसी के पत्ते को चबाकर खाने से कोई नुकसान या किसी प्रकार का इन्फैक्शन होता है ?

उत्तर : जी हाँ, पायरिया रोग होने की संभावना होती है ।

समाचार

कल्पना चावला—पहली भारतीय महिला अन्तरिक्ष यात्री

करनाल (हरियाणा) की मूल निवासी कल्पना चावला भारत की पहली महिला अन्तरिक्ष यात्री है। उन्होंने पिछले दिनों नासा के उपग्रह कार्यक्रम के अन्तर्गत उड़ान भरी। वे आजकल अमेरिका में रहती हैं। कल्पना प्रारम्भ से ही कुछ अनूठा करना चाहती थी और उसने अन्तरिक्ष में जाने के लिए बचपन से ही सपने सजोये। अपनी विलक्षण क्षमता व साहस के बल पर उसने एक के बाद एक सफलताएं प्राप्त की। वायुयान प्रौद्योगिकी के जिन विषयों पर मात्र लड़कों का ही एकाधिकार माना जाता था कल्पना ने वे विषय लिये और अपने सपनों को सच किया।

उन्नति के शिखर पर पहुंचने के बावजूद उसने अपने प्रारम्भिक विद्यालय को नहीं भुलाया। वह जो टी शर्ट पहनकर गयी है उस पर उसके प्रारम्भिक विद्यालय का नाम अंकित है और उसे उस विद्यालय ने ही उसके लिए बनवाकर भेजा है। प्रारम्भिक विद्यालय के वर्तमान छात्रों व शिक्षिकाओं ने भी कल्पना को अपनी शुभकामनाएं भेजी है।

डॉ. अब्दुल कलाम को भारत रत्न

मिसाइल प्रौद्योगिकी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले प्रख्यात वैज्ञानिक और रक्षा मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार श्री (डॉ.) ए पी जे. अब्दुल कलाम को देश के सर्वोच्च नागरिक अलंकरण 'भारतरत्न' के लिए चुना गया है। डॉ. कलाम, रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन के भी अध्यक्ष है। वे भारत के 'अग्नि-पुरुष' के रूप में भी प्रख्यात है उन्होंने 'अग्नि, पृथ्वी, नाग और आकाश' जैसे मिसाइलों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वे उपग्रह प्रक्षेपण यानों के विकास से भी जुड़े रहे है।

हँसती दुनिया की लेखिका—कु. अंशु शुक्ला पुरस्कृत

उदीयमान बाल कलाकारों एवं 'हंसती दुनिया' की नियमित लेखिका कु. अंशु शुक्ला को उनके बाल कविता संग्रह 'नाचे मोर मचाये शोर' पर 'श्रीमती शिवबती दुबे स्मृति पुरस्कार 1997' प्रदान किया गया है। यह पुरस्कार प्रतिवर्ष बाल साहित्य संस्थान उन्नाव द्वारा बाल साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने वाले साहित्यकार को उसकी प्रकाशित कृति पर दिया जाता है। 'नाचे मोर मचाये शोर' कु. अंशु की बाल कविताओं का पहला संग्रह है एवं यह मध्यप्रदेश साहित्य परिषद, भोपाल के सहयोग से विवेक प्रकाशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुआ है।

(प्रेषक: परशुराम शुक्ल)

उभरती प्रतिभा ऋतम्भरा लोहान

चौथी कक्षा की छात्रा, नौ वर्षीया ऋतम्भरा लोहान की टाइप करने की गति 60 शब्द प्रति मिनट है। वह विद्यालय से मिला अपना गृहकार्य टाइप राइटर द्वारा ही करती है। निरन्तर अभ्यास द्वारा वह विश्व की सबसे कम उम्र की योग्यतम टाइपिस्ट बनना चाहती है।

ऋतम्भरा की माता श्रीमती उषा लोहान कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में प्राध्यापिका है तथा पिता डॉ. आदित्य लोहान नलवा में कार्यरत है। इन दोनों ने ऋतम्भरा को भरपूर योगदान दिया, जिसके परिणाम स्वरूप उसने मात्र 3 वर्ष की आयु में तैरना सीख लिया था। अनेक दौड़ प्रतियोगिताओं में शामिल होकर उसने अनेक पुरस्कार व प्रमाण पत्र प्राप्त किये है। उसने हरट्रेन कम्पनी से कम्प्यूटर का भी प्रशिक्षण लिया है। (प्रेषक: विद्या श्रीवास्तव)

5 लाख उपेक्षित बच्चों के लिए प्रयास कर रही है पतिता उद्धार सभा

समाज में शोषित व उपेक्षित महिलाओं के 5 लाख उपेक्षित बच्चों के लिए भारतीय पतिता उद्धार सभा ने शिक्षित करने का अभियान शुरु किया है। इस संगठन ने अन्य विभिन्न समाजसेवी संगठनों के सहयोग से सम्बन्धित इलाकों में मुफ्त देखभाल एवं शिक्षण केन्द्र चलाने की योजना बनायी है। गुजरात सरकार ने इस योजना के क्रियान्वयन के लिए सभा को जमीन दी है जबकि अन्य राज्य सरकारें इस प्रस्ताव पर विचार कर रही हैं।

इस प्रकार का पहला विद्यालय इलाहाबाद (उ.प्र.) के मोरगंज क्षेत्र में शुरु किया गया है। सबको शिक्षित करने की दिशा में यह एक सराहनीय प्रयास है।

❑ राम कुमार 'सेवक' द्वारा

हँसती दुनिया के नये सदस्यों की सेवा में
विशेष निवेदन

- जिन सन्त-महात्माओं ने स्वर्ण जयन्ती सन्त समागम के अवसर पर हँसती दुनिया की वार्षिक सदस्यता ग्रहण की है, उनसे निवेदन है कि हँसती दुनिया प्राप्त होने पर कृपया लिफाफे पर लिखा अपना पता जाँच लें। यदि उसमें कुछ त्रुटि हो तो कृपया पत्रिका विभाग को लिखकर ठीक करा लें।
- जिन ग्राहकों का वार्षिक शुल्क दिसम्बर 1997 में खत्म हो गया हो तो नये वर्ष का शुल्क कृपया शीघ्र भेजें।

प्रबन्धक
हँसती दुनिया,
सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-9

पढ़ो और हँसो

एक कंजूस व्यक्ति अपने घर की सबसे ऊपर की मंजिल पर कुछ काम कर रहा था ।

काम करते समय वह छत से गिर गया । गिरते वक्त बीच में चिल्लाया—भागवान, आज मेरे लिये खाना मत पकाना ।

— नेहा माखीजा (जबलपुर)

एक आदमी (डॉक्टर से) डॉ साहब मुझे कोई ऐसी दवा दीजिए कि मैं सब कुछ भूल जाऊं ।

डॉक्टर : ठीक है दवा पीने से पहले मेरी फीस तो दे दीजिए । आप उसे न भूल जाएं ।

\+ \+ \+

एक आदमी डॉक्टर से : डॉ. साहब मुझे रात को नींद नहीं आती है ।

डॉक्टर : तो दिन को सोया कीजिए ।

—किशोर जसवानी (मण्डला)

दो व्यक्ति आमने सामने खड़े होकर बातें कर रहे थे ।

पहला मूर्ख बोला— मूर्ख और समझदार में क्या अन्तर है ।

दूसरा : यही कि मूर्ख मेरे सामने खड़ा है और समझदार तुम्हारे सामने ।

—ओमसिंह (ब्यावर-अजमेर)

ग्राहक : बैरा-बैरा दाल में दो मक्खियां है ।

बैरा : काहे का शोर मचा रहे हो, एक निकाल कर फेंक दो ।

— ओम, नीलम, हमीर (भीम)

गणित के अध्यापक : (बच्चों से) चार किलो दाल 50 आदमियों के लिए पर्याप्त है, अगर 25 आदमी और आ जाएं तो कितनी दाल की आवश्यकता होगी ?

होटल मालिक का बेटा : सर, दाल तो उतनी ही रहेगी बस पानी और नमक की मात्रा बढ़ानी पड़ेगी ।

— ओमसिंह पंवार (भीम)

शिक्षक : भारत में मृत्यु की औसत दर क्या है?

विद्यार्थी : शत-प्रतिशत ।

शिक्षक : क्या मतलब?

विद्यार्थी : यहां का हर व्यक्ति जो पैदा होता है अन्त में मर जाता है ।

\+ + +

एक मालिक गधे के नहला रहा था तो एक अन्य आदमी ने
छा—भाई तुम गधे को क्यों मसल-मसलकर धो रहे हो?

ालिक : कल इसकी शादी है ।

सरा : तब तो हम भी शादी में आयेगा । पर खिलाओगे क्या?

ालिक : जो गधा खाएगा वही तुम भी खा लेना ।

\+ + +

दो मूर्ख सुबह-सुबह घूमने निकले सामने एक गाय खड़ी थी जिसके मुंह
झाग निकल रही थी ।

हला : देखो यार गाय मुँह से दूध दे रही है ।

सरा : तुम तो हो मूर्ख तुम्हें मालूम नहीं सुबह का वक्त है गाय के मुंह
में टुथपेस्ट है ।

\+ + +

हन : जागे सो पावे, सोये जो खोये का वाक्य में प्रयोग करो ।

रण : चोर रात को जागते है अतः पाते है और हम रात को सोते है
इसलिए खोते हैं ।

—रेणुका निरंकारी (कुरखेड़ा)

नदार : हम आपको टेलिविजन के साथ एक दूरबीन मुफ्त देंगे ।

क : अच्छा! पर क्यों?

नदार : इसलिए कि आपका टेलीविजन खराब हो जाए तो दूरबीन
की मदद से पड़ोसी का टेलिविजन देख सके ।

—राजेश कुमार निरंकारी

नवम्बर अंक रंग भरो प्रतियोगिता का परिणाम

प्रथम : मोनिका रानी — आयु 10 वर्ष
मु.-पोस्ट - लखनौती
जिला - सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

द्वितीय : हरमनदीप कौर जौरा — आयु 11 वर्ष
52-बी, विकास नगर,
पक्खोवाल रोड, लुधियाना (पंजाब)

तृतीय : वन्दना चौधरी — आयु 9 वर्ष
6/124 निरंकारी कालोनी
दिल्ली-110009

इन बच्चों को हँसती दुनिया परिवार की ओर से पुरस्कार भेजा जा रहा है।

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसन्द किया गया वे है — विश्वास कुमार (मोदी नगर), रेखा बर्मी टेकवाणी (बीड़ शहर), प्रीत पाल सिंह (उत्तम नगर, दिल्ली), तितिन बधवा (नारनौल), गुप्रमा सिंह (शहडोल) स्मृति (निरंकारी कालोनी, दल्ली)

फरवरी अंक की रंग भरो प्रतियोगिता

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भर कर 28 फरवरी तक हँसती दुनिया कार्यालय में भेज दें। तीन सर्वश्रेष्ठ चित्रों पर पुरस्कार दिये जायेंगे।

पुरस्कारों की घोषणा हँसती दुनिया के अप्रैल अंक में की जायेगी। चित्र के नीचे दिये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पूरा पता साफ-साफ अवश्य भरें। प्रतियोगिता में 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही हिस्सा ले सकते हैं।

पुरस्कारों के विषय में 'सम्पादक, हँसती दुनिया' का फैसला अन्तिम और मान्य होगा।

रंग भरो

नाम ..... आयु .....

पूरा पता .....

.....

.....

आवश्यक सूचनाएं

हँसती दुनिया (मासिक) को आप घर बैठे ही मंगवा सकते हैं। इसका वार्षिक शुल्क मात्र 30/- रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 300/- रुपये है। यह शुल्क आप नीचे लिखे पते पर मनीआर्डर/चैक/बैंक ड्राफ्ट/पोस्टल आर्डर आदि द्वारा भेज सकते हैं—

सचिव,

(प्रकाशन विभाग)

सन्त निरंकारी मण्डल

सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009

नोट : चैक/ड्राफ्ट आदि सन्त निरंकारी मण्डल के नाम दिल्ली में देय होने चाहिए।

- ❑ जब भी आपका पता बदले तो पता बदलवाने के लिए पुराना व नया दोनों पूरे पते साफ-साफ व स्पष्ट अक्षरों में लिखें। चिट संख्या भी देंगे तो सुविधा होगी।
- ❑ अगर आप पहले से ही पत्रिका के सदस्य हैं तो पत्रिका का बकाया चन्दा भेजते समय भी कृपया अपना चिट नम्बर अवश्य लिखें।
- ❑ जिस लिफाफे में आपको पत्रिका मिलती है उसके ऊपर जहाँ आपका पता लिखा होता है, वहीं पर शुरू में आपका चिट नं. भी छपा होता है, उसे कृपया नोट कर लें।
- ❑ यदि आपको पत्रिका न मिलने की सूचना देनी हो तो वह चिट नं. भी साथ लिख दिया करें। इससे कार्य में सरलता हो जाती है।

1. बिल्ली मौसी

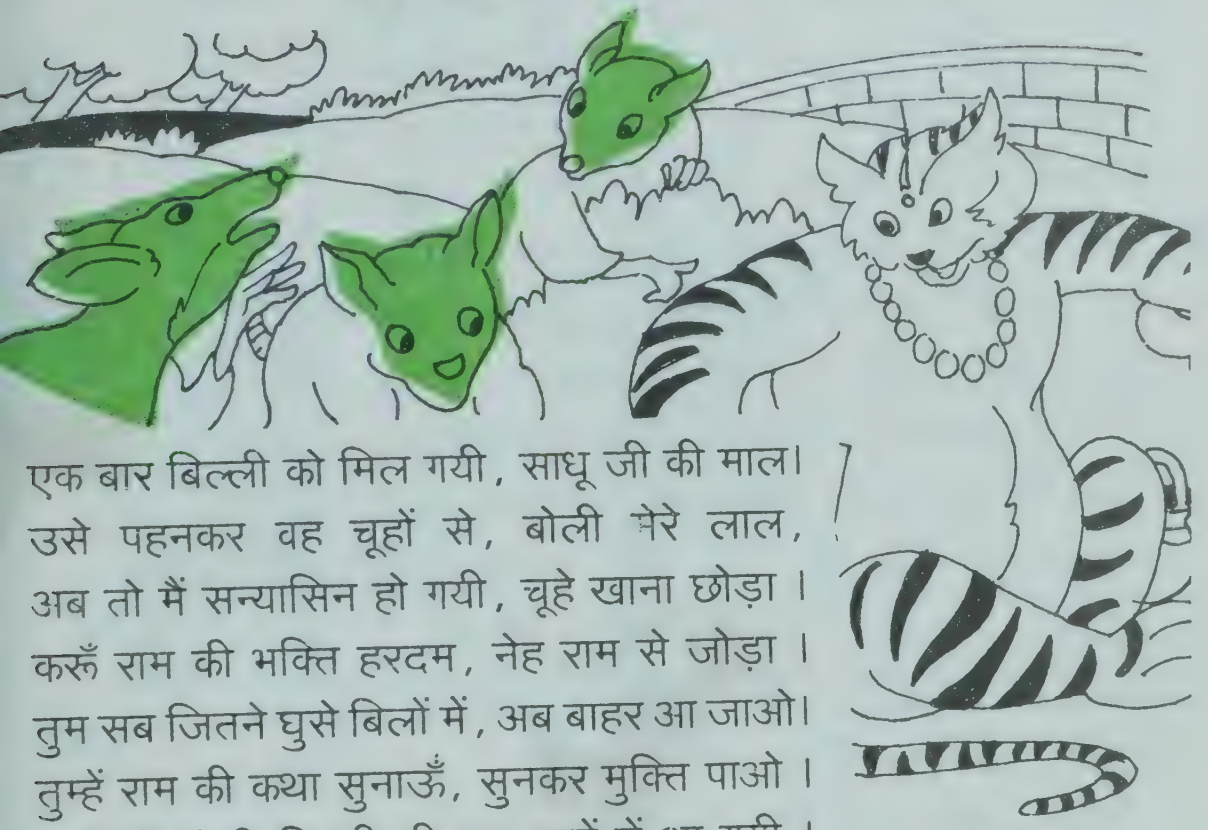

एक बार बिल्ली को मिल गयी, साधू जी की माल।
उसे पहनकर वह चूहों से, बोली मेरे लाल,
अब तो मैं सन्यासिन हो गयी, चूहे खाना छोड़ा।
करूँ राम की भक्ति हरदम, नेह राम से जोड़ा।
तुम सब जितने घुसे बिलों में, अब बाहर आ जाओ।
तुम्हें राम की कथा सुनाऊँ, सुनकर मुक्ति पाओ।
चूहों की टोली बिल्ली की इन बातों में आ गयी।
धोखा देकर बिल्ली मौसी, सब चूहों को खा गयी।

2. बीमार लोमड़ी

एक बार की बात हुई बीमार लोमड़ी।
गयी वैद्य के पास सुनाकर हाल रो पड़ी।
मुझको चढ़ा बुखार और खाँसी भी आये।
दे दो कोई दवा मेरी खाँसी मिट जाये।
हाथ देखकर कहा वैद्य ने —हे लोमड़ी माई।
कौवे को धोखा देकर क्या उसकी रोटी खाई।
इसीलिये खाँसी आती है अब सुई लगवाना।
धोखा देकर कभी किसी की रोटी अब न खाना।

3. अजगर और बकरी

बकरी पानी भरके निकली, सर पर एक घड़ा था ।
उसे देखकर अजगर बोला, जो चुपचाप पड़ा था ।
बड़ी देर से प्यासा हूँ मैं ओ बकरी महारानी ।
राम तुम्हारा भला करेंगे, मुझे पिला दो पानी ।
बकरी बोली–अजगर दादा, क्यों तुम प्यासे रहते ।
थोड़ी दूर नदी बहती है, वहाँ नहीं जा सकते ।
राम नाम से धोखा दोगे, मैं पहचान गयी हूँ ।
तुम मुझको भी निगल जाओगे, खूब ये जान गयी हूँ ।
क्रोधित होकर मुँह फैलाकर जब अजगर फुंकारा ।
जल से भरा घड़ा बकरी ने उसके सिर पर मारा ।
जान बचाकर सरपट भागी, फिर तो बकरी रानी ।
चोट लगी अजगर को भारी, याद आ गयी नानी ।

4.दो का पहाड़ा

दो एकम दो, मुन्ने मत रो ।
दो दूनी चार, रोना है बेकार ।
दो तीये छै, रोना बुरा है ।
दो चौके आठ, याद करो पाठ ।
दो पंचे दस, चुप हो जा बस ।
दो छक्के बारह, बोलो किसने मारा ।
दो सत्ते चौदह, किसने तोड़ा पौधा ।
दो अट्ठे सोलह, तूं है बड़ा भोला ।
दो नाम अट्ठारह, तू है बड़ा प्यारा ।
दो धाम बीस, बोलो जय जगदीश ।

दो गप्पी आपस में-
मेरे दादा के जमाने में एक व्यक्ति पांच मंजिल ईमारत सें गिर गया, लेकिन उसे चोट बिल्कुल भी नहीं आयी
इसमें तो कोई बात नहीं! मेरे दादा के जमाने में एक व्यक्ति पंचा सवीं मंजिल से गिरा...
...फिर क्या हुआ ?
होना क्या है? अभी तक तो वह गिर ही रहा है। जब गिर जायेगा तब बताऊंगा कि उसका क्या हुआ!

मास्टर जी
कहानी-विनय जोशी
आओ बच्चो तुम्हें फर्राटे शाह की कहानी सुनाऊँ!
जी मास्टर जी!
फर्राटा हर काम को तेजी से करने का आदी था *
परीक्षा सर पर थी-
हिन्दी-आसान है- थोड़ी देर में ही कर लूँगा।

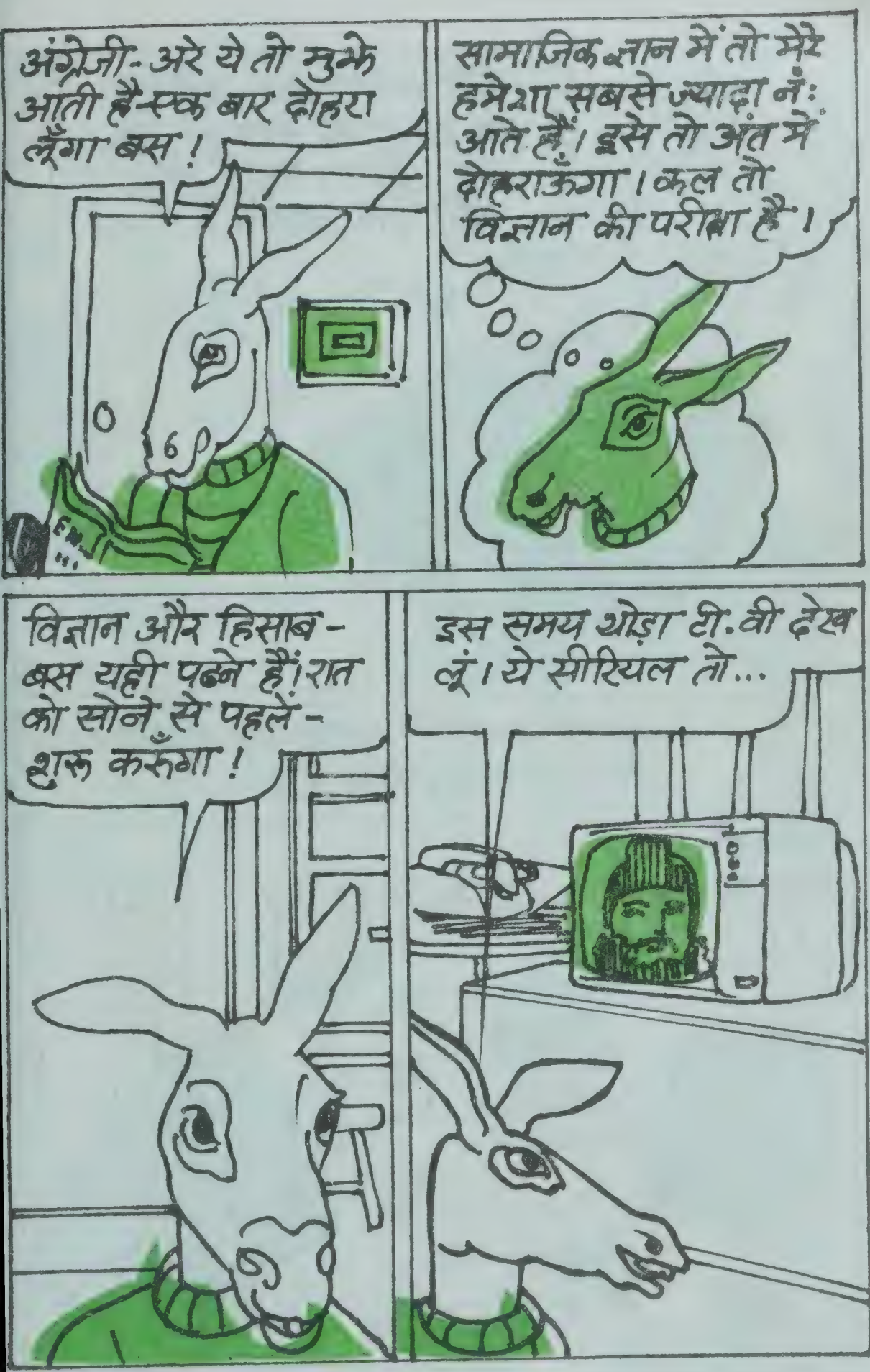
अंग्रेजी- अरे ये तो मुझे आती है-एक बार दोहरा लूँगा बस !
सामाजिक ज्ञान में तो मेरे हमेशा सबसे ज्यादा नंः आते हैं। इसे तो अंत में दोहराऊँगा। कल तो विज्ञान की परीक्षा है।
विज्ञान और हिसाब - बस यही पढ़ने हैं। रात को सोने से पहले - शुरू करूँगा !
इस समय थोड़ा टी.वी देख लूं। ये सीरियल तो...

चलो रात के 11·30 बज गये। एक घण्टा सो लेता हूँ - फिर ताजा उठूँगा ! पढ़ाई तो... पूरी रात अपनी है !
वह सो जाता है - पर दिमाग़ व आँखें टी॰ वी॰ देखकर थके हैं।
सुबह सात बजे जब नींद खुली
अरे ये क्या?

क्या बात है- फर्राटे -!
माँ तुमनें जगाया क्यूँ नहीं आज विज्ञान की परीक्षा है मैंनें दोहराया ही नहीं।
मैं न कहती थी - हर काम समय पर किया करो तो सारे काम ठीक से हो जायेंगे। पर तुम तो...
नहीं माँ भविष्य में सब ठीक से करूँगा
देखा बच्चो तुम कभी फर्राटे मत बनना !
कभी नहीं मास्टर जी!

ज्ञानी लकड़हारा

एक जंगल में एक ऋषि तपस्या करते थे । वे सबेरे जल्दी उठते, नदी में स्नान करते, ईश्वर की आराधना करते और पेड़ों से फल तोड़कर खाते । फिर दिन भर ध्यान में लीन रहते ।

एक दिन एक लकड़हारा लकड़ी काटने जंगल में आया । शाम को वह घर जाने लगा, तो रास्ता भूल गया । भटकता हुआ वह ऋषि के पास पहुँचा ।

ऋषि जब ध्यान से उठे तो देखा, एक लकड़हारा उनके सामने हाथ जोड़े खड़ा है । ऋषि ने उसकी तरफ देखा और पूछा--तुम कौन हो? और कहाँ से आए हो, क्या चाहते हो?

लकड़हारा बोला--मैं कोई नहीं हूँ महाराज, कहीं से नहीं आया हूँ और कुछ नहीं चाहता हूँ ।

ऋषि को लकड़हारे का उत्तर सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ । उन्होंने कहा —

यह कैसे हो सकता है कि तुम कोई नहीं हो, कहीं से नहीं आए हो और कुछ नहीं चाहते हो ।

तब लकड़हारे ने ऋषि से पूछा--आप कब से तपस्या कर रहे हैं, महाराज?

—बचपन से -- ऋषि ने उत्तर दिया ।

—मतलब यह कि आपने दुनिया को देखा तक नहीं है लकड़हारे ने पूछा ।

--हाँ, और देखने की इच्छा भी नहीं है । क्या रखा है इस दुनिया में ? लोग बेइमानी और दूसरों का हक छीनकर अपना पेट भरते हैं । योग, धर्म और तपस्या संसार से दूर रहकर ही की जा सकती है । -- ऋषि का उत्तर था ।

तब लकड़हारा बोला--महाराज, यह बहुत पहले की बात है । अब तो दुनिया बहुत बदल गई है । हर आदमी योगी और तपस्वी हो गया है । आप यदि योग, धर्म और समाधि पाना चाहते हैं और इतने वर्ष संसार से दूर रहकर भी नहीं पा सके हैं, तो हमारी दुनिया में रहकर बहुत जल्दी पा जाएंगे ।

--इसका सबूत?-- ऋषि ने पूछा ।

--सबूत आपको दूँगा, महाराज! परन्तु पहले आप यह बताएं महाराज कि आप तपस्या से कैसा ज्ञान पाना चाहते हैं । -- लकड़हारे ने प्रश्न किया ।

--हमें यह ज्ञान पाना है कि यह सृष्टि क्या है? हम क्या हैं और ईश्वर कहाँ है?-- ऋषि ने कहा ।

-- इनके उत्तर तो मेरी बातों में ही मिल जाएंगे । आपको दूर जाने की जरूरत नहीं है । आपने मुझसे पूछा कि मैं कौन हूँ? मैंने कहा--मैं कोई नहीं हूँ । मतलब साफ है कि इस घने जंगल में जहाँ मुझे कोई नहीं जानता मेरा किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है । यहाँ मेरा होना न होना बराबर है । सृष्टि मनुष्यों के आपसी सम्बन्धों के बिना कुछ नहीं है । -- लकड़हारे ने गम्भीर होकर कहा ।

ऋषि ने लकड़हारे की यह बात सुनी तो श्रद्धा से उसे अपने पास बैठाया और बोले--अब दूसरे सवाल का उत्तर दो ।

-- आपका दूसरा सवाल था -- मैं कहाँ से आया हूँ ?

-- मैंने उत्तर में कहा, कहीं से नहीं । मतलब यह है कि मैं केवल लकड़ी काटकर अपना परिवार पालता हूँ । मेरे बाप-दादा भी यही काम करते थे । मैं

वहीं का वहीं है । इस तरह जन्म लेते है और मरते है । बस यही क्रम चल रहा है । -- लकड़हारे ने कहा ।

ऋषि ने लकड़हारे के सामने सिर झुका दिया और तीसरे सवाल का जवाब भी माँगा ।

लकड़हारे ने कहा--मैं अपनी मेहनत से परिवार का पेट भरता हूँ । मैं किसी से भीख नहीं माँगता और न मेरी छोटी-सी दुनिया में ईर्ष्या, द्वेष और कलह है । हम संतुष्ट हैं । मै पढ़ा हुआ नहीं हूँ परन्तु सुना है कि जो अपनी इच्छाएँ वश में कर लेता है, वह योगी है और ईश्वरत्व को प्राप्त कर लेता है ।

सुनकर ऋषि की आँखें खुल गई । वह लकड़हारे के पैरों में गिर गए और बोले--लेकिन तुम्हें तपस्या के लिए समय कहाँ मिलता होगा?

तब लकड़हारे ने कहा--अनुभव सबसे बड़ी तपस्या है । महाराज! बिना काम के बैठे सोचते रहने से जो बात जीवन भर समझ में नहीं आती, वह जीवन के अनुभव से समझ में आ जाती है ।

लकड़हारे के उत्तरों से ऋषि जीवन का सच्चा मार्ग पा गए । फिर जीवन के लम्बे रास्ते पर चल पड़े ।

कहानी : राम अरोड़ा

चालाक कछुआ

एक था कछुआ । चलने में सुस्त, मगर बुद्धि में चुस्त । एक बार वह अपने दोस्त से मिलने गया । कछुए का दोस्त दूसरी नदी में रहता था । रास्ते में कछुए को एक शेर मिला, कछुआ डर गया । अब क्या होगा? शेर ने कछुए को देखा, तो खुश हो गया, चलो, कुछ खाने को तो मिला ।

उसने कछुए को रोक लिया । आगे बढ़कर उसकी पीठ पर पंजा मारा । कछुए की पीठ ढाल जैसी कठोर होती है । शेर का पंजा दर्द करने लगा ।

कछुआ बोला—वन के राजा! लगता है तुम्हारे नाखून तेज नहीं है । उन्हें किसी चट्टान पर घिसाकर तेज कर लो ।

कछुआ सोचता था—शेर नाखून तेज करने जाएगा, तो मैं सामने वाली झाड़ी में छिप जाऊँगा ।

मगर शेर भी कम चालाक नहीं था । उसने कछुए को अपने जबड़े में दबा लिया और चट्टान की खोज में चल दिया । अब कछुआ सोचने लगा कि आज तो बुरा फसा । ऐसा न हो कि पंजे तेज करके शेर उसे धरती पर गिराए, तो वह पेट के बल जा गिरे । ऐसा हुआ तो शेर उसका पेट आसानी से फाड़ देगा।

शेर नदी के किनारे आया । पास ही में एक चट्टान थी । शेर वहीं पर रुक गया । जबड़े में कछुए को पकड़े-पकड़े चट्टान पर नाखून घिसाने लगा ।

कछुए ने फिर दिमाग लगाया बोला—वनराज! अगर नाखून घिसने से पहले पानी में भिगो लो तो आसानी से घिस जाएंगे ।

शेर इस बार भी कछुए की बात मान गया । कछुआ सोचता था, शेर नाखून भिगोने के लिए जैसे ही उसे छोड़कर जाएगा, वह नदी में छलांग लगा देगा।

शेर ने इस बार फिर चालाकी की । वह कछुए को मुँह में दबाए-दबाए नदी पर गया । पंजे गीले करने लगा ।

अब क्या करूँ? लाचार कछुए ने सोचा । लगता है, आज शेर मुझे जरूर गड़प कर जाएगा ।

तभी उसे एक उपाय और सूझा । शेर पंजे भिगो कर वापस मुड़ने ही वाला था तो कछुआ फिर बोला—पंजे अभी पूरी तरह भीगे नहीं और भिगो लो । आपको पंजे भिगोने भी नहीं आते ।

यह सुनकर शेर को गुस्सा आ गया । बोला—क्या कहा? मुझे पंजे भिगोने नहीं आते—यह कहते हुए जैसे ही उसने मुँह खोला, कछुआ जबड़े से निकल नदी में जा गिरा । डुबकी लगाकर कछुआ यह जा, वह जा, और बेचारा शेर उसे ताकता, गुर्राता रह गया । ●

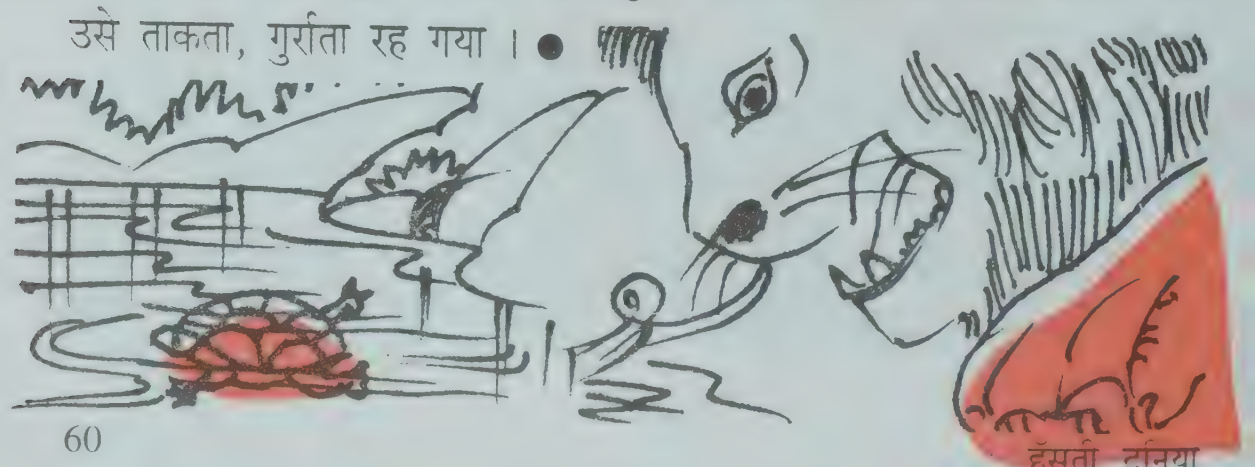

कहानी : सुभाष कुमार

पढ़ाई का महत्व

चन्दा कक्षा की सबसे कमजोर छात्राओं में से एक थी । वह अपना अधिक समय खेल-कूद में बिताया करती थी । माता जी और पिताजी जब पढ़ने के लिए डाँटते तो वह मन मारकर थोड़ी देर के लिए किताब उठा लेती । उसकी सहेलियाँ पूछतीं—चन्दा जब तुम बिल्कुल पढ़ती नहीं तो पास कैसे हो जाती हो ?

तो वह कहती—पास होना तो मेरा बाएँ हाथ का काम है । हर वर्ष अगल-बगल बैठी परीक्षार्थियों की नकल उतार लेती हूँ । बस ।

दिन बीतते रहे चन्दा ने कुछ भी पढ़ाई नहीं की । फिर परीक्षा के दिन आये चन्दा नकल मारने की तैयारी करके घर से चल दी । सभी परीक्षार्थियों को पर्चे बाँट दिए गये । चन्दा पर्चा पढ़कर चुपचाप बैठी रही क्योंकि उसे प्रश्नों का उत्तर नहीं आता था । इसलिए वह अपने पास बैठी छात्राओं के लिखने का इन्तजार कर रही थी । लेकिन पास पैठी छात्रा चन्दा से भी अधिक कमजोर थी । वह स्वयं भी किसी की नकल उतारने की ताक में थी । चन्दा और वह एक दूसरे को देखती रहीं उसके चेहरे पर अजीब सी उलझन छाई हुई थी ।

परिणाम घोषित हुआ तो चन्दा के रोल नम्बर का कहीं पता नहीं था । चन्दा पहली बार फेल हुई थी इसलिए वह किसी से भी आँख नहीं मिला पा रही थी।

मम्मी जी के पास पहुँचकर वह सिसक-सिसककर रोने लगी । मम्मी जी ने धीरज बँधाया, बेटी मैं तो तुझसे पहले ही कई बार कह चुकी हूँ कि नकल मारने वाले व्यक्ति कभी भी जीवन की दौड़ में आगे नहीं निकल सकते । अगर तुम्हें दुनिया में नाम कमाना है तो नकल का सहारा मत लो । अपने मौलिक गुणों को विकसित करो और फल प्राप्ति की इच्छा न रखो । यदि ऐसा करोगी तो अवश्य ही एक सफल छात्रा बनोगी ।

सच माँ, मैंने आपकी बात पहले ही मान ली होती तो आज असफलता का मुँह न देखना पड़ता । चन्दा ने फिर कहा, माँ अब मैं पढ़ाई का महत्व समझ गयी हूँ । अगले वर्ष कक्षा में सबसे अधिक अंक जरूर लाकर दिखाऊँगी । चन्दा के इस दृढ़ विचार को समझकर माँ ने उसे गले से लगा लिया । ■

कविता : किशोर निरंकारी

गलत संग

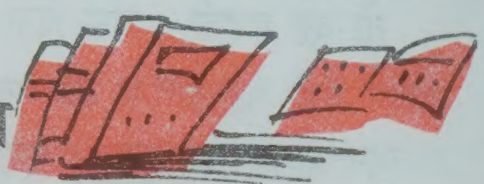

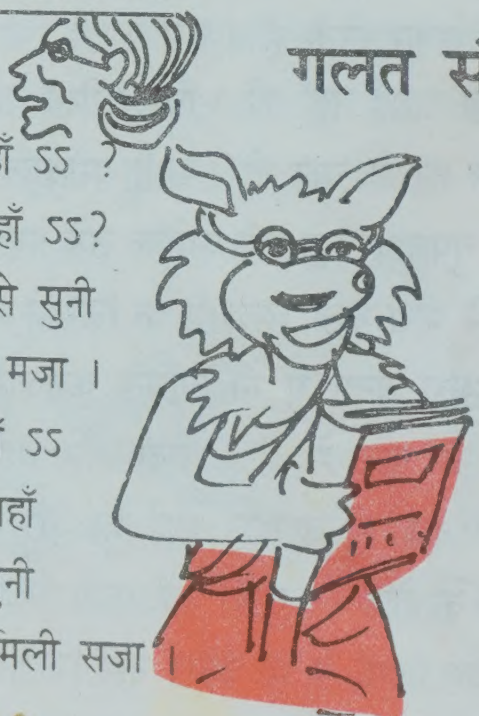

किताबें कहाँ ऽऽ ?
कापियाँ कहाँ ऽऽ?
बस नानी से सुनी
कहानी का मजा ।
टी.वी. यहाँ ऽऽ
केबल है यहाँ
मम्मी से सुनी
डांट फिर मिली सजा ।

मस्ती वहाँ ऽऽ
शोरगुल वहाँ ऽऽ
टीचर की शिकायतें
पता नहीं क्या है वजह ।
चेतना जहाँ ऽऽ
सबकुछ वहाँ ऽऽ
सर्वगुणी बना वहीं
गलत संग जिसने तजा ।

कविता : राम अरोड़ा

दूध और चाँद

मम्मी ने राजा भैया को
सुन्दर चाँद दिखाया,
तब तक गैया दोह कर भैया
दूध बहुत-सा लाया ।
एक कटोरा दूध चाँदनी में
रखकर वह बोला—
ऊपर देखो चमक रहा है
स्वच्छ चाँद का गोला ।
जो भी प्यारा राज दुलारा ।
दूध पीएगा सारा ।
उसका मुँह भी हो जाएगा
चंदा जैसा ही प्यारा ।
झटपट उसने दूध-कटोरा,
मुँह के पास लगाया ।
पिया दूध सारा का सारा,
छोड़ा नहीं बकाया ।
उसी समय से चंदा जैसा,
राजा बना दुलारा ।
रूप दिया चंदा मामा ने
राजा को ही सारा ।

आपके पत्र मिले

मैं 'हँसती दुनिया' का नया पाठक हूँ। मैं हँसती दुनिया से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। मुझे इस पत्रिका में 'पढ़ो और हँसो' और 'कभी ना भूलो' बहुत अच्छे लगते हैं। मैं इसे बड़े चाव से पढ़ता हूँ मैं प्रसन्न हूँ। मैं चाहता हूँ कि मैं भी हंसती दुनिया का सदस्य बन जाऊँ।

—ब्रह्मदेव मंगला (बोहा, पंजाब)

मैं हँसती दुनिया का पुराना पाठक हूँ। इस मुझे बहुत बेसब्री से इन्तजार रहता है। लोक कथा, एवं कहानियाँ, दादा जी के उत्तर, जानकारी, कभी न भूलो, यह सभी शिक्षाप्रद होते हैं।

—प्रभाकर तकोले (इन्दौर)

सर्वप्रथम मैं आपकी हँसती दुनिया के कुशल संपादन हेतु बधाई देता हूँ। पत्रिका का नवम्बर 97 अंक देखा। इसकी सभी कहानियाँ, कवितायें और लेख पसन्द आये। कु. अंशु शुक्ल की कविता 'वृक्ष की चेतावनी' और किशोर डैनियल का लेख 'मेरे जीवन का लक्ष्य' रोचक और आकर्षक हैं। मेरा सुझाव है कि आप विज्ञान संबंधी लेख नियमि रूप से प्रकाशित करें।

—कुमार अभिषेक(भोपाल

मैं हँसती दुनिया का नया पाठक हूँ इ पत्रिका की जितनी भी तारीफ की जाए उत कम है। मुझे कविताएँ और पढ़ो और हँस आदि बहुत अच्छे लगे हैं। समाचार तथा दाद के उत्तर जानकारी पूर्ण और शिक्षाप्रद होते है

—शंकर कुकरेजा (दोंडाईचा

हँसती दुनिया का नवम्बर विशेषांक क बेसब्री से इंतजार था। पत्रिका हाथ में आते ही अत्यधिक खुशी हुई क्योंकि मैं हमेश इसका इन्तजार करता रहता हूँ। नवम्ब विशेषांक सराहनीय और मन को अत्याधिक आनन्दित करता है। विशेषकर अपनी दुनिय बच्चों के तरह-तरह फोटो मन को खुशक पत्रिका में छपे सभी लेख, कहानियाँ, कविताए मन को छू जाती हैं। मैं और मेरे परिवार के सदस्य हँसती दुनिया के दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करती रहे ऐसी कामना प्रभु से करते हैं।

—रामकुमार, लता मेश्राम(बीरूटोला)

पहेली

मेरे नाम का पहला अक्षर हँसने में है रोने में नहीं।
मेरे नाम का दूसरा अक्षर सम्मान में है अपमान में नहीं।
मेरे नाम का तीसरा अक्षर तीर में है, तलवार में नहीं।
मेरे नाम का चौथा अक्षर दुलार में है, फटकार में नहीं।
मेरे नाम का पाँचवाँ अक्षर निरंकार में है, आकार में नहीं।
मेरे नाम का छठा अक्षर यारी में है दोस्ती में नहीं।

— संगीता सिंह (मिर्जापुर)

उत्तर : हँसती दुनिया